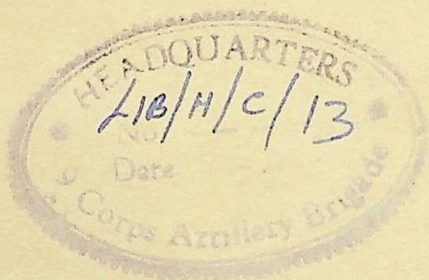
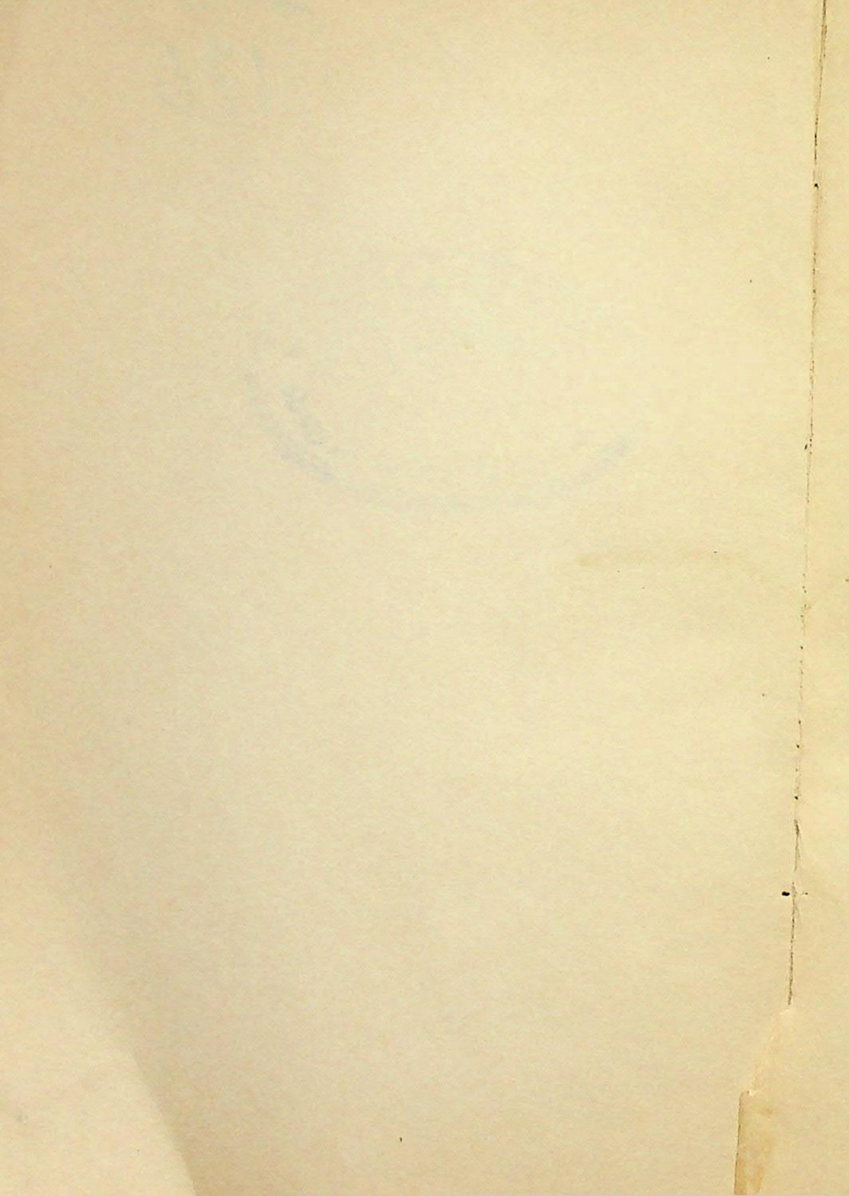

HEADQUARTERS
LIB/H/C/13
No.
Date
Corps Artillery Brigade



चिराग़ की लौ

चिराग़ की लौ

[तीन-अंकी नाटक]

रेवती सरन शर्मा

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

प्रकाशक :

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२६ ए, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली

बिक्री-केन्द्र : नई सड़क, दिल्ली

मूल्य : २ रुपये ५० नये पैसे

प्रथम संस्करण : सितम्बर, '६२

आवरण : त्यागी

मुद्रक : भारत मुद्रणालय, शाहदरा-दिल्ली-३२

लेखक

लैफ़्टिनैण्ट जनरल बी० एम० कौल

का

आभारी है, जिन्होंने इस नाटक के अन्त के

बारे में बहुमूल्य सुझाव देकर नाटक

प्रभाव में वृद्धि की ।

दो शब्द

यह मेरा पहला तीन-अंकी नाटक है, जिसे मैंने स्टेज पर खेलने के लिए लिखा है। दिल्ली के स्टेज पर कामेडियां बहुत कामयाब होती हैं। इसलिए मुझे भी मशवरा दिया गया कि मैं भी कामेडी लिखूं, जिसमें लतीफ़ेबाज़ी हो, लैंगिक छेड़छाड़ हो, ऊटपटांग घटनाओं की भरमार हो और गंभीरता, ट्रैजेडी और विचारों को दूर से सलाम हो। लेकिन बद-नसीबी से मेरी आसक्ति इन्हीं तीन चीज़ों में है, जिन्हें दूर से सलाम करने में दिल्ली मंच के नाटककार अपनी खैरियत समझते हैं। इसलिए 'कला साधना मंदिर' संस्था ने और उसके निर्देशक इस्लामुद्दीन ने यह फैसला करके सचमुच एक खतरा मोल लिया कि वे मेरा ही नाटक स्टेज करेंगे।

लेकिन मुझे यह तजुर्बा करके बड़ी खुशी हुई कि दिल्ली के नाटक देखने वालों पर जो लांछन लगाया जाता है, वह बड़ी हद तक मंच नाटक-कारों की अपनी उथली प्रवृत्ति, विचार-शून्यता और अपने क़लम पर अवि-श्वास की परछाईं है। दिल्ली में गम्भीर नाटकों के प्रति कोई ऐलर्जी नहीं है। यहाँ के लोग न केवल उसे पसन्द करते हैं बल्कि उसके गम्भीर स्थलों और विचारशील सम्वादों पर उससे भी ज़्यादा ज़ोरदार दाद देते हैं, जैसी कि आमतौर पर मनोरंजक स्थलों पर देते हैं। अगर गम्भीर नाटक को सचमुच ज़ोरदार शैली में लिखा जाए तो दूसरे दर्जे की प्रोडक्शन होने पर भी नाटक, देखने वालों की प्रशंसा से वंचित नहीं रह सकता।

मेरा यह नाटक एक ट्रैजेडी है। एक हद तक विचारप्रधान है और इसमें आज की कुछ खतरनाक सामाजिक प्रवृत्तियों का चित्रण है। दूसरे शब्दों में इसमें वे सब ऐब मौजूद हैं जो उन लोगों को मेरे रेडियो-नाटकों

में नज़र आते हैं जो मसखरेपन को साहित्य का सबसे शुद्ध और सफल रूप समझते हैं और सिर पर तिकोनी फुन्दनेदार टोपी लगाने और चेहरे पर प्लास्टीसीन की सूजी नाक सजाने में ही अपना और दूसरों का कल्याण समझते हैं।

मगर यह शायद अपनी-अपनी मजबूरी है। मसखरे लोग चाहने पर भी विचारक नहीं बन सकते और विचारों से सरोकार रखने वाले विचारों को छोड़, नंग-धड़ंग हो और धारीदार शलवारें पहन कर उल्टे-सीधे करतब नहीं दिखा सकते।

अन्त में मैं इस नाटक के निर्देशक श्री इस्लामुद्दीन के सब्र और धैर्य की दाद देना चाहता हूँ जो छः महीनों तक मेरे झूठे वायदों पर जीते रहे और आखिर मुझे मजबूर कर दिया कि मैं उनकी खातिर नहीं तो अपने झूठे वायदों की इज़्ज़त की खातिर ही ड्रामा लिखकर उन्हें दूँ। मैंने आखिर ड्रामा लिखकर दे दिया। अब जहाँ उनकी तमन्ना है कि उनको मुझ जैसे लेखक से वास्ता न पड़े, वहाँ मेरी दुआ है कि उन जैसे सख़्त जान निर्देशक से सबका साबक़ा पड़े।

२१ जुलाई, '६२

रेवती सरन शर्मा

पात्र-परिचय

किशोर	— नवयुवक इन्कम टैक्स इन्सपैक्टर
तारा	— किशोर की पत्नी
जयन्त	— मिल मालिक
रानी	— जयन्त की पत्नी
गिरीश	— कमीशन एजेंट
नसीम	— नवयुवक एडीटर
मि० मेहता	— रिश्वतखोर इन्कम टैक्स इन्सपैक्टर
मिसेज़ मेहता	— मेहता की पत्नी
सेठ	— अधेड़ उम्र का मारवाड़ी सेठ
मुनीम	— सेठ का मुनीम
मैनेजर	— जयन्त की मिल का मैनेजर
चक्रवर्ती	— बोगस अखबार का बोगस एडीटर
शोफ़र	— रानी का ड्राइवर
बैरा	— रानी का बैरा
अर्दली	— किशोर का अदली
गंगाराम	— नसीम का चपरासी
सेल्समैन	— ड्रैपर का स्मार्ट सेल्समैन
लड़का	— ड्राइक्लीनर का नौकर
चार मज़दूर	} सामान उठाने वाले।

इस नाटक को सर्व-प्रथम कला साधना मंदिर ने दिल्ली के मंच पर, २१ मार्च, ६१ को प्रस्तुत किया। जिन कलाकारों ने अपने सहयोग से इसे सफल बनाया, भूमिकाओं सहित उनके नाम, साभार, नीचे दिये जाते हैं।

निर्देशक—इस्लामुद्दीन

एडीटर—वेद राही

किशोर ··· ··· ··· सुरेन्द्र वर्मा

तारा··· ··· ··· ···साधना गुप्ता

रानी··· ··· ··· ···वीणा सेठी

जयन्त······ ··· ···सतीश सहगल

गिरीश············ सुरेन्द्र सेठी

सेठजी ············ सी० एस० नागर

मुनीमजी··· ··· ···विनोद चोपड़ा

मि० मेहता ··· ··· बालकृष्ण सूद

मिसेज़ मेहता······ उर्मिल राजपाल

सेल्स गर्ल······शारदा चोपड़ा
(सेल्समैन की जगह)

आया······ शकुन्तला सक्सैना

ड्राइवर ··· ··· सुरेन्द्र शर्मा

अर्दली·········पवनकुमार

गंगाराम······ वेद राही

डांस मास्टर ···तीर्थ राम आज़ाद

नसीम·········राजगुप्त राजीव

मेकअप···के० के० जोहरी

सैट···डी० वी० नन्दा

स्टेज मैनेजर—इन्द्रकुमार शर्मा

सूची

उस मुख्य स्टेज प्रापरटी की, जिसकी ज़रूरत इस नाटक को खेलने के लिए पड़ेगी।

पहला एक्ट—किशोर का कमरा

पर्दे, दो सैट
एक श्रृंगार मेज़ और स्टूल, श्रृंगार के सामान सहित
एक लिखने की मेज़ और कुर्सी
बैत का बना सोफ़ा, उस पर रुई की गद्दियाँ
सैन्टर टेबल
एक बुक रैक, किताबों सहित
दो बड़ी तस्वीरें
एक कलैण्डर
एक एक्सप्रेस चिट्ठी
एक टाइम-पीस
जूड़े में लगाने के लिए फूल
दो गुलदान
एक रेडियो का डिब्बा, एक क़ालीन } सेठजी के लाने के लिए
नए सोफ़े की एक कुर्सी }
सोडे की तीन बोतलें, तौलियों और ट्रे सहित
खिलौने, दो डिब्बों में
फ़र का बेबी कोट } डिब्बे में
सूट का कपड़ा }

एक साड़ी, डिब्बे में
एक स्कार्फ़
एक लेडीज़ पर्स
पर्स और उसमें पाँच का नोट
सिग्रेट, माचिस
पगड़ी, सफ़ेद कोट, धोती (सेठजी के लिए)
पगड़ी, कुरता, धोती, क़लम (मुनीम के लिए)

दूसरा एक्ट—रानी का ड्राइंग रूम

बढ़िया पर्दे, तीन सैट
शानदार सोफ़ा सैट
दीवान, उसका कवर और चौकोर
गद्दियां
पिडास्टल लैम्प
शैल्फ़
टेबल लैम्प
गुलदान
गमले फूलों के
क़ालीन
रेडियो
सैण्टर टेबल, शीशे की टाप वाली
छोटी तिपाइयाँ
गाव तकिया
टेलीफ़ोन
तबला

घुंघरू
दीवार पर लगाने के लिए पेंटिंग्ज़
अमरीकन मैगज़ीन
फोटो एलबम
बहुत-सी चिट्ठियाँ
(एडीटर के लिए)
काफ़ी, नमकीन काजू
चाय लाने की ट्राली
ड्राइवर के लिए नीली वर्दी—कैप समेत
बैरे के लिए सफ़ेद वर्दी—साफ़े समेत
एक टाइप्ड अर्ज़ी
सफेद हैट (गिरीश के लिए)
पाइप (जयन्त के लिए)
गाउन (जयन्त के लिए)
नक़ली रुपयों की गड्डी
शेरवानी (नसीम के लिए)
सिगरेट

तीसरा एक्ट—किशोर का कमरा

लाल कपड़े में बंधा बहीखाता
बिस्तरबन्द
सूटकेस
शैचल
एक चिट्ठी
नया ऊनी लेडीज़ कोट
ड्राइक्लीनर के यहाँ से आए कपड़े—
  कागज़ के लिफ़ाफ़ों में
दस-दस के पाँच नोट
एक बड़ी पीतल की चाबी
भगोना—ढकने समेत—दूध का
दो खाकी पतलूनें
मैली सूती धोतियाँ
प्लेट, सन्तरे, केले, फल, काफ़ी
क़ालीन—नया
सोफ़ा—नया
वार्ड रोब—नया
रेडियो
काला चश्मा (तारा के लिए)
नया सूट
नया गाउन
लिफ़ाफ़े में टाई
डिब्बे में रेडीमेड शर्ट

रेवती सरन शर्मा
चीफ़ ट्रांसलेशन आफ़ीसर
जनरल स्टाफ़ ब्रांच (एम० टी० १६)
आर्मी हैडक्वार्टर, नई दिल्ली—११

पहला अंक

पहला दृश्य

[एक साधारण-सा कमरा, जिसमें सामान ठीक तरह से लगाया नहीं जा सका है। बीच में बैंत का बुना सोफा-सैट है जिस पर गद्दियां रखी हैं। दाहिनी तरफ एक श्रृंगार-मेज़ है जो नई ख़रीदी गई है पर सस्ती है। बीच में मैंटल पीस पर एक पुराने डिज़ाइन की अलार्म क्लाक रखी है जिसका अलार्म किस समय बज जाए, अलार्म की सुई सैट करने के बाद भी भरोसे से नहीं कहा जा सकता। घड़ी के दोनों तरफ दो शीशे के गुलदान हैं जिन्हें अभी फूलों का इन्तज़ार है। बांई तरफ एक बुक-रैक है जिसमें बहुत-सी किताबें हैं। कोने में एक लिखने की मेज और कुर्सी है। बाहर का दरवाज़ा दाहिनी तरफ है और अन्दर का बांई तरफ। जब पर्दा उठता है तो इन्कम-टैक्स इंस्पैक्टर किशोर की पत्नी तारा एक स्टूल पर चढ़कर मैंटल पीस के दाहिनी तरफ दीवार पर तसवीर लगाती नज़र आती है। इतने में किशोर अन्दर से नहा कर तौलिये से बाल पोंछता अन्दर आता है। तारा ने हैंडलूम की चैक की धोती पहन रखी है जिसका पल्लू उसने कमर के गिर्द लपेटा हुआ है। किशोर कमीज़ और पायजामा पहने है। तारा को तसवीर लगाते देखकर वह श्रृंगार-मेज़ की तरफ जाते-जाते मुड़कर तारा की ओर जाता है।]

किशोर : यह क्या ? तुम अभी तक काम पर लगी हो ! उतरो ! उतरो···

तारा : (मुस्कराकर देखते हुए) उतरती हूं। यह लगा लूं।

किशोर : नहीं-नहीं; उतरो !

<। : लो, लग गई (किशोर कुर्सी पकड़ता है। तारा उतरती है।)

किशोर : नहाने के लिए जाते हुए कह गया था कि और कुछ न करना······

तारा : तसवीरें लगानी रह गईं थीं।

किशोर : मैं लगा देता।

तारा : (मुस्कराते हुए) मैंने लगा दीं तो क्या हुआ ?

किशोर : कैसे नहीं हुआ ? सुबह से काम में जुटी हो···

तारा : घर अपना नहीं है ?

किशोर : पर जान भी तो अपनी है।

तारा : (पास आकर कमीज़ का सामना पकड़कर प्यार से हिलाते हुए) उसे कुछ नहीं होगा। वो तो यहाँ है (किशोर के दिल की तरफ़ इशारा करती है।)

किशोर : अच्छा-अच्छा, मेरी बातें रिलाने की कोशिश न करो। अब जा कर नहा आओ (बाँहों में लेकर उसे अन्दर भेजने के लिए दरवाज़े की ओर ले जाता है।)

तारा : (बाँहों से निकल कर) नहा आऊंगी, ज़रा सुस्ताने तो दो। (सोफ़े पर थक कर बैठ जाती है।)

किशोर : (सोफे के हत्थे पर बैठकर उसके माथे पर हाथ फेरते हुए) थक गईं ? (तारा निगाहें उठाकर उसकी ओर देखते हुए आहिस्ता-आहिस्ता गर्दन हिलाकर बिना बोले इन्कार करती है।)

किशोर : झूठ मत बोलो। बंधा सामान खोलना, नये घर में लगाना और बिना किसी की मदद के—मैं जानता हूं कितना मुश्किल होता है !

तारा : तुमने नहीं लगाया क्या ?

किशोर : मेरी और बात है—तुम ने तो कभी अपने घर में···

तारा : (हल्के से बिगड़कर) तुम फिर मेरे घर की बातें करने

लग गये !

किशोर : (गहरी सांस लेकर, उठते हुए) करनी ही पड़ती हैं, तुम्हें इतना काम करते देखकर। कहां नौकर-चाकर, बैरे-बटलर; कहां सब कुछ अपने हाथ से···

तारा : (सोफ़े से उठकर) मैं कितनी बार कह चुकी हूं कि तुम यह न कहा करो। (थके-से स्वर में) तुमसे मैंने अपनी मर्ज़ी से शादी की थी।

किशोर : तभी तो यह हुआ है, वरना कहां एक लखपती की बेटी और कहां एक मामूली-सा २५० रुपये पाने वाला इन्कमटैक्स इन्सपैक्टर !

तारा : तुम नहीं मानोगे ? (उठ कर) मैं अन्दर जाती हूं।

किशोर : अरे नहीं-नहीं; सुनो !

तारा : नहीं (वह आगे बढ़ती है, किशोर तेज़ी से बढ़कर उसे बाज़ू से पकड़ लेता है।)

किशोर : नाराज़ हो गईं ?

तारा : छोड़ो मुझे। (झटक कर बांह छुड़ा लेती है।) कितनी बार कहा है कि मुझे अच्छे सामान, अच्छे फरनीचर, अच्छे कपड़े, बैरे और बटलरों की याद न दिलाया करो···जो वहां है, उसका ज़िक्र न किया करो।

किशोर : अच्छा-अच्छा; (कान पकड़कर) ऐसी बेहूदा बातें कभी नहीं करूंगा।

तारा : (होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ जाती है।) भूल कर भी नहीं ?

किशोर : ना भई ना—भूल के लिए माफ़ करना होगा; क्योंकि—'भूल पर ज़ोर नहीं है ये वो ज़ालिम ग़ालिब; जो भगाए न भगे और टलाए न टले'।

(दोनों हंसते हैं। तभी मिस्टर और मिसेज मेहता अन्दर

आते हैं। मिस्टर मेहता भी इन्कमटैक्स इन्सपेक्टर हैं। सामने कुछ सहमे-सहमे रहते हैं) मिसेज मेहता उन हैं जिन पर हर चीज फटी पड़ती है—चर्बी, क शृंगार। कमरे में दाखिल होते ही आदमी से पह पर्दों और कपड़ों को आंकना-जोखना उनकी आदत

मेहता : (अन्दर आते हुए) मिस्टर किशोर !

किशोर : मेहता साहब, आइए आइए !

मेहता : ये हैं मेरी मिसेज़।

किशोर : नमस्ते ! आइए, ये तारा हैं, मेरी वाइफ़।

तारा : नमस्ते !

मिसेज़ मे. : नमस्ते (मगर नमस्ते कम कहती हैं, कमरे का मुआयना ज्यादा करती हैं।)

तारा : बैठिये !

मेहता : हमने सोचा, आप अपने नये घर में सैटिल हो गये होंगे। मिल आयें।

तारा : आपने बहुत अच्छा किया। बस, अभी सामान जमा कर चुके हैं...

मिसेज़ मे. : क्यों आपके नौकर नहीं है ?

तारा : जी नहीं। अभी कोई मिला ही नहीं।

मिसेज़ मे. : क्यों नहीं मिला ? तीस रुपये, रोटी-कपड़ा दो, जितने नौकर चाहिए, मिल जायेंगे।

तारा : लेकिन मिसेज़ मेहता, इतने में बहुत महँगा नहीं है ?

मिसेज़ मे. : महँगा है ? मैंने तो चालीस का खाना बनाने को रखा है, तीस का कपड़ा धोने और पन्द्रह का ऊपर के काम को।

तारा : (उसकी बात से खिन्न होकर) आपके लिए क्या लाऊं, ठण्डा या चाय ?

मिसेज़ मे. : जी नहीं, हम कुछ नहीं लेते। हम तो अभी शिटैण्डर्ड में

डिनर लेकर आ रहे हैं।

मेहता : (घबरा कर) इनका मतलब है, लंच।

मिसेज़ मे. : (भड़क कर) लंच क्यों? वो जो खाना खाकर हम आ रहे हैं, वो लंच था? देखिये जी, सूप था, मच्छी थी, दही वाला मीट था, सलाद था, नान थी, बाद में हमने फरूट क्रीम और आइस-क्रीम ली···पूरे बारह का बिल आया। ये लंच हुआ कि डिनर?

किशोर : (हँसकर) ये तो डिनर से भी ज़्यादा हुआ मिसेज़ मेहता।

मिसेज़ मे. : बात ये है जी कि हम इतवार को कभी घर नहीं खाते। हमेशा शिटैण्डर्ड में ही खाते हैं। ये कहते हैं किसी और होटल में ही खा लिया करो, पर मैं नहीं खाती। खाना चाहे बुरा हो, पर अच्छे होटल में ही जाती हूं।

मेहता : (घबरा करके यह सिलसिला जाने कब तक चले) किशोर साहब, आपका मकान तो देखें।

किशोर : चलिये। (उठ खड़ा होता है) दो ही कमरे हैं—वो भी सैट नहीं हुए।

मेहता : वो तो हो जायेंगे। (दूसरे कमरे की ओर जाते हुए)···ये ···ये आपका दूसरा कमरा है?

किशोर : जी। (मिसेज मेहता से) मैं अभी हाज़िर हुआ।

मिसेज मे. : जाओ जी, इन्हें दिखा लाओ। (दोनों जाते हैं।) इनकी तो राल टपकती रहती है दूसरों का मकान देखने को। पर मैं किसी का मकान नहीं देखती। (पर इतना कहते ही उठकर कमरे पर नज़र डालने लगती हैं।)

मिसेज मे. : क्यों जी, आप लोगों के पास इतना ही सामान है?

तारा : जी।

मिसेज़ मे. : मैंने कहा, आप लोगों के पास और कुछ नहीं है—दरी, कालीन, गुलदान, बुत—कुछ नहीं?

तारा : जी नहीं।

मिसेज़ मे. : क्यों दहेज में कुछ नहीं लायीं ?

तारा : जी नहीं। मेरे पिता ग़रीब हैं।

मिसेज़ मे. : तभी...तभी...मैं तो देखते ही समझ गई थी। पीहर नंगा, ससुराल भूखा, दोनों तरफ़ सफ़ाचट है।

(शृंगार-मेज की तरफ बढ़ जाती हैं। स्टूल पर बैठकर आईने में देखकर जूड़ा ठीक करती हैं। फिर उसका शीशा हिला कर और उसकी लकड़ी देखकर)

मिसेज़ मे. : ये अभी लायी हो ?

तारा : जी हाँ। आज ही आयी है।

मिसेज़ मे. : (नाक चढ़ाकर) पर घटिया है। कश्मीरी गेट से ली होगी ?

तारा : जी।

मिसेज़ मे. : ऐसी चीज़ें वहीं मिलती हैं। मैं तो कनाट पलेस से बनवाती हूं। जहाँ बढ़िया डिज़ैन देखा, वहीं आडर दे दिया। (शृंगार-मेज को छोड़ कर मैंटल पीस की तरफ जाती हैं। पहले गुलदान उलट कर देखती हैं। उसे बे-दिली से रख कर घड़ी उठाती हैं और घड़ी को उलट-पलट कर देखने के बाद)

मिसेज़ मे. : ये कौन-सी घड़ी है ?

तारा : मालूम नहीं।

मिसेज़ मे. : (रखते हुए) घटिया है। मैं बम्बई गयी थी। हर साल जाती हूं। वहीं से लायी थी इकवंजा रुपये की। (आगे बढ़कर दरवाजे पर पड़े पर्दों को थाम लेती हैं।) ये कहाँ से लिये ?

तारा : मालूम नहीं। ये लाये थे।

मिसेज़ मे. : हूं। ये भी सस्ते हैं। पिछली नुमायश से मैं लायी थी बारह रुपये गज़ के पर्दे।

(पर्दा छोड़ कर किताबों के रैक की ओर झुकती हैं।)

मिसेज़ मे. : अरे ! ये इतनी किताबें कैसी हैं ?

तारा : इनकी हैं।

मिसेज़ मे. : तो यहां क्यों रखी हैं ? जहां पहले रहती थीं, वहां रद्दी-बोतल वाला नहीं आता था क्या ?

तारा : **(हैरान होकर)** आता था।

मिसेज़ मे. : तो इन्हें बेच क्यों नहीं डाला ?

तारा : **(और हैरान होकर)** आप···आप किताबें बेच देती हैं ?

मिसेज़ मे. : **(घृणा से)** अजी, मैं किताबों के इस कूड़े-करकट को घर में आने ही कहां देती हूं। अगर कोई छोड़ भी जाये तो अगले ही दिन रद्दी-बोतल वाले को उठवा देती हूं।

तारा : यानी आप कभी-कोई किताब नहीं पढ़तीं ?

मिसेज़ मे. : **(व्यंगपूर्वक)** मुझे रखी है फुर्सत ऐसे बेकार कामों की ! कल-वल कोई आये तो उठवा देना इनको। घर में यह गन्द अच्छा नहीं लगता।

(घूम कर फिर सोफ़े की तरफ़ आती हैं, पर बैठते-बैठते गद्दियां उठा लेती हैं और उनको इस तरह खोल कर देखती हैं जैसे लोग रोटी खोल कर उसके परत देखते हैं।)

मिसेज़ मे. : अरे, ये रुई की हैं !

तारा : जी।

मिसेज़ मे. : मेरे घर में सब रबड़ की हैं। एक दिन गद्दे, गद्दियां, तकिये सब उठाकर अलग कर दिये और बाज़ार से रबड़ की ले आई। आपने रबड़ की देखी हैं ?

तारा : **(पूर्ण अवसाद से)** जी नहीं।

मिसेज़ मे. : हां, आपने नहीं देखी होंगी। नयी दिल्ली में ही मिलती हैं, और बड़ी-बड़ी दुकानों पर। हम तो वहीं शापिंग करते हैं। **(एक साथ चौंककर मिस्टर मेहता को आवाज देते हुए)** अजी सुनना···ज़रा सुनना !

मेहता : (अन्दर से) आया ! (आकर) जी !

मिसेज़ मे. : देखना, दफ्तर से आते हुए मेरे लिए टिच-बटन लेते आना। लेकिन नयी दिल्ली की किसी दुकान से लाना···मुझे छोटी दुकानों का माल पसन्द नहीं।

मेहता : अच्छा-अच्छा ! (ज्यादा बेकरार होकर) किशोरसाहब, छत किधर है ? वो भी देख लें (**किशोर को बाहर ले जाता है।**)

मिसेज़ मे. : ऐसे मकान देख रहे हैं जैसे लाल किला देख रहे हों। मैं तो ऐसे मकान में एक दिन न रहूं। आपने मेरा मकान देखा है ?

तारा : जी नहीं।

मिसेज़ मे. : हां ! कहां से देखतीं···पिछले हफ्ते तो आयी हो। मेरे यहां आना, मैं आपको सब कुछ दिखलाऊंगी। मेरे यहां रैफ़री-जनरेटर भी है।

तारा : (चौंककर) जी रैफरी-जनरेटर ?

मिसेज़ मे. : हां-हां रैफ़री-जनरेटर ! आपने नहीं देखा ?

तारा : जी नहीं।

मिसेज़ मे. : मेरे यहां आना, मैं दिखा दूंगी। छः क्यूबिक फुट हार्स-पावर है।

(**तभी मेहता और किशोर दाखिल होते हैं। मिसेज मेहता खड़ी हो जाती हैं।**)

मिसेज़ मे. : कुछ ख्याल भी है कि नहीं···सनीमा का टैम हो रहा है ! (**घड़ी देखकर**) अरे, तीन बज गए; सवा तीन बजे तो सो शुरू होता है।

किशोर : लेकिन आपने न कुछ खाया, न पिया।

मिसेज़ मे. : अजी आपके दो बिस्कुट खाने बैठे तो हमारा सात रुपये का नुकसान हो जायेगा। सबसे ऊंची किलास के टिकिट लिये हैं, साढ़े तीन-तीन रुपये वाले।

(**चलने के लिए दरवाजे के करीब पहुंच जाती हैं।**)

मेहता : अच्छा मिस्टर किशोर ! मिसेज़ किशोर ! (हाथ जोड़कर नमस्ते करता है।)

मिसेज़ मे. : (हाथ पकड़ खींच कर बाहर ले जाती हुई) अब चलो भी ! (दरवाजे के बाहर पहुंचकर ऐसे नमस्ते कहती है जैसे बेगार उतारी हो। मिसेज मेहता के जाते ही तारा तेजी से अन्दर जाने लगती है।)

किशोर आवाज़ देता है)।

किशोर : तारा ? अरे कहां चलीं (दौड़कर पकड़ता है।) क्या हुआ ?

तारा : (आंखों में आये आंसुओं को सँभालते हुए दूसरी ओर देखकर) कुछ नहीं।

किशोर : तो जा क्यों रही हो ? हुआ क्या ?

तारा : (उसी तरह) कुछ भी तो नहीं।

किशोर : (हँसने की कोशिश करते हुए) उस बेवकूफ और जाहिल औरत की बातों पर नाराज़ हो गईं ?

तारा : (भड़क कर) तुमने उसे बुलाया क्यों ?

किशोर : मैं क्यों बुलाता...मैंने तो मेहता को भी नहीं बुलाया। अपने-आप आ गया।

तारा : यह है कौन ?

किशोर : मेरे साथ काम करता है, इन्कमटैक्स इन्सपेक्टर है।

तारा : (तेज स्वर में) फिर इसकी बीवी के इतने नख़रे और इतने मिज़ाज कैसे हैं ? कैसे हिम्मत की उसने मेरे घर आकर मेरी, मेरे घर का मज़ाक उड़ाने की ? उसे हक़ क्या था...?

किशोर : (शान्त करने के लिए) बेवकूफ को हक़ होता है ?

तारा : (और गर्म होकर) वह बेवकूफ है ?

किशोर : वह जाहिल और गंवार भी है जिसे बात करने, उठने-बैठने की तमीज़ नहीं। तुमने नहीं देखा था, मेहता खुद उससे अलग-

अलग रहने की कोशिश कर रहा था।

तारा : (शान्त न होते हुए) लेकिन अगर उसे मालूम है कि उसकी बीवी को ज़बान हिलाने की तमीज़ नहीं तो उसे क्यों लाया ? क्यों लिये-लिये फिरता है उसे ?

किशोर : तारा, वह लिये नहीं फिरता; दरअसल वो उसे लिये फिरती है।

तारा : (चौंक कर) क्या ?

किशोर : (समझाते हुए) मुझे यकीन है अपने कपड़ों, अपने ज़ेवरों और अपने घर के साज-सामान की शेख़ी बघारने वह खुद मेहता को यहां लाई होगी। वरना मेहता जानता है कि उसकी बीवी जाहिल है।

तारा : ग़लत ! तुमने उसके कपड़े देखे ? उसके ज़ेवर देखे ? उसका साज-सिंगार देखा ? अगर वह उसे जाहिल समझता तो उसे यह सब कुछ लाकर क्यों देता ?

किशोर : मेहता ने उसे कुछ भी लाकर नहीं दिया है।

तारा : (और चौंक कर) क्या !

किशोर : (उसी स्वर में) हां ! जो कुछ भी उसके पास है, रिश्वत देने वालों ने लाकर दिया है।

तारा : क्या ? क्या वह रिश्वत लेता है ?

किशोर : वह महकमे का सबसे बदनाम अफसर है। पहले हैडक्लर्क था। जब कोई बुरा अफ़सर आ जाता, इसकी चांदी हो जाती। खुद लेता और हिस्सा अफ़सर को देता। अब खुद खाता है, खुद हज़म करता है।

तारा : (विस्मय से) और पकड़ा नहीं जाता !

किशोर : (गहरी सांस लेकर) तारा, जब लेने वाला चालाक हो और देने वाले को गिला न हो तो आदमी मुश्किल से पकड़ा जाता है। सुना है, अस्सी हज़ार का मकान बनवाया है !

तारा : अस्सी हज़ार का ?

किशोर : हां, मगर बीवी के नाम पर। इसलिए अब बीवी से न कुछ कह सकता है, न उसके मुंह में लगाम डाल सकता है।

(तभी डाकिये की आवाज़ आती है।)

डाकिया : साहब, एक्सप्रेस चिट्ठी'''

किशोर : एक्सप्रेस चिट्ठी ?

(दरवाजे से बाहर आता है। तारा एक तरफ खड़ी होकर देखती है। किशोर चिट्ठी फाड़ कर पढ़ता हुआ अन्दर आता है।)

तारा : किसकी है ?

किशोर : घर से आयी है।

तारा : क्या लिखा है ?

किशोर : कुछ नहीं—कान्ता के लड़का हुआ है। कपड़े देने होंगे'''सौ रुपये मंगाये हैं।

तारा : सौ रुपये ! हमारे पास कहां हैं जो हम भेजें ?

किशोर : तारा, भेजने होंगे—मंगाये जो हैं।

तारा : (भड़क कर) गलत। मैं उन रुपयों में से कुछ न भेजने दूंगी जो मैंने जमा किये हैं। वे घर की चीज़ें लाने के लिए हैं।

किशोर : लेकिन मेरे पास और रुपये कहां हैं ?

तारा : नहीं है तो न सही। उन रुपयों में से पाई न जायेगी।

किशोर : (हैरान होकर) तारा, तुम यह क्या कह रही हो ?

तारा : जो सही है और मेरा आखिरी फैसला है। आखिर हम ही घर रुपये क्यों भेजें'''और बेटे नहीं हैं ?

किशोर : वे गरीब हैं'''

तारा : (विद्रोहपूर्वक) और हम बड़े दौलतमंद हैं ! हमारे कोठियां हैं, कारें हैं, बैंक बैलैन्सिज़ हैं, हम क्या हैं ? हमारे पास है क्या ?

(कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू आ जाते हैं।)

किशोर : (हैरान होकर) तारा, तुम्हें क्या हो गया है ?

तारा : (ज्वलन्त निगाहों से देखते हुए) मुझे ? मुझे कुछ नहीं हुआ;

सिर्फ एक औरत आकर मेरे मुंह पर जूते मार गई है···मेरे खानदान के मुंह पर राख मल गई है···मुझे इतनी लज्जा दिला गई है कि अगर मैं शर्मदार होती तो इसी समय ज़मीन में गड़ गई होती···मर गई होती ।

(रो पड़ती है और चेहरे को हाथों में छिपा कर वहीं बैठ जाती है। किशोर 'तारा-तारा' कहता हुआ उस पर झुकता है। रोशनी बुझ जाती है।)

दूसरा दृश्य

(वही कमरा। किशोर का दोस्त नसीम पीठ फेरे, तसवीरें देख रहा है और गुनगुना रहा है।)

नसीम : *"जिन्दगी यूं भी गुज़र ही जाती,—*
क्यों तेरा रह-गुज़र याद आया।
फिर तेरे कूचे को जाता है ख्याल
दिले गुम-गुश्ता मगर याद आया।"

किशोर : **(अन्दर से आकर)** अरे नसीम, तुम कब आये ?

नसीम : हम ? **(गहरा सांस लेकर)** अरे—'हमारा आना, हमारा जाना, ऐ जाने-जाना—न गुल का खिलना, न राग छिड़ना, न रुत सलोनी।'

किशोर : हाय-हाय; क्या शेर कहा है ! लेकिन ख़ैर तो है ?

नसीम : ख़ैर मेरी, ख़बर तेरी—नहीं-नहीं, नहीं-नहीं।

किशोर : तो आज प्रोज में जाने का इरादा नहीं है ?

नसीम : अरे दोस्त, आज बहुत दिन बाद रूह आज़ाद हुई है। आज तो उसे गुनगुनाने दो; वरना आज तक तो···

ज़िन्दगी कुछ इस ढंग से गुज़री ग़ालिब,
हम भी क्या याद रखेंगे कि ख़ुदा रखते थे।

(बग़ल में हाथ डाल कर सोफे की तरफ़ लाते हुए)

किशोर : लेकिन हुआ क्या ? हम भी तो सुनें कि रूह कैसे आजाद हुई ?

नसीम : इस तरह कि दो साल पहले जिस शायर की रूह को गिरफ़्तार करके इन्कमटैक्स महकमे के पिंजरे में डाल दिया गया था, आज वह आज़ाद हो गई।

किशोर : (सहम कर) क्या ? तूने नौकरी छोड़ दी ?

नसीम : हां दोस्त ! मैंने इस्तीफ़ा दे दिया···उस नौकरी को लात मार दी जो मुझे फ़ना कर रही थी।

किशोर : तुझे फ़ना कर रही थी···?

नसीम : क्यों ! क्या इस नौकरी से इन्सान जल कर खाक़ नहीं हो जाता ? उसका ईमान, उसका आदर्श, उसका चैन खतरे में नहीं पड़ जाता ?

किशोर : (समझते हुए) पड़ जाता है; लेकिन नसीम, गिरना न गिरना इन्सान के अपने हाथ में है।

नसीम : कौन जाने। कमज़ोरी की कौन घड़ी में, मजबूरी के कौन-से पल में आदमी का क़दम डिग जाए, किशोर, कोई नहीं जानता। हर घड़ी लोग कारों, डालियों, सौगातों और सिफ़ारिशों के फन्दे डालते रहते हैं।

किशोर : लेकिन यह थोड़े दिनों की बात होती है। जब लोगों को मालूम हो जाता है कि किनारा कटने वाला नहीं है, लोग कोशिश छोड़ देते हैं।

नसीम : लेकिन ये बेईमानी से भरपूर खाते, ये हिसाबों के अंधेरे जंगल, ये घिघियाते हुए चेहरे···इनसे तो मुक्ति फिर भी न मिलती।

किशोर : तुम्हें इनसे इतनी नफ़रत है ?

नसीम : मुझे उन सब आदमियों से नफ़रत है जिनकी आंखों में हविस की आग जलती है, जिनकी सांसों से ज़लालत और मतलब-परस्ती की बू आती है।

(तभी तारा कमरे में आती है।)

तारा : (मुस्कराते हुए) आज ये शेरो-शायरी के बजाय लैक्चर कैसा ?

नसीम : भाभीजान, तसलीम !

तारा : तसलीम ! आज किस बात पर लैक्चर हो रहा है ?

किशोर : नौकरी छोड़ कर जा रहा है।

तारा : (जैसे ऊपर से नीचे गिर कर) क्या ? आपने नौकरी छोड़ दी ? क्यों ?

नसीम : (हौले से मुस्कराते हुए) पसंद नहीं आई भाभी। फिर ऐडीटरी करेंगे।

तारा : लेकिन आपने नज़मा भाभी से भी पूछा ?

नसीम : (शोख़ी से) भाभी, शेर कहने के अलावा सब कुछ उनसे पूछ कर ही करता हूं।

तारा : (और चौंक कर) और उन्होंने इजाज़त दे दी ?

नसीम : (और चौंकते हुए) इजाज़त ?...यह तो उनका इसरार था।

किशोर : (आँखें फाड़कर) क्या भाभीजी ने कहा कि नौकरी छोड़ दो !

नसीम : किशोर, तुम्हारी भाभी ने मुझे एक शायर के तौर पर चाहा है। मैं शायर न रहूं, मेरी शायरी को गहन लग जाए, यह उन्हें कतई मंजूर नहीं।

तारा : तो ऐडीटरी में कितना मिलेगा ?

नसीम : दो सौ।

तारा : यानी जितना अब मिलता है, उससे भी पचास रुपये कम ?

नसीम : (संजीदा होकर) अगर सौ रुपये भी कम मिलें तो उन्हें गम न होगा भाभी। दो वक़्त रोटी मिल जाए, ज़िन्दगी अपने उल्टे-सीधे ख्यालों और खाबों के साथ गुज़र जाए, हमें कोई गिला न होगा।

(एकाएक घड़ी का अलार्म बज उठता है।)

नसीम : (संजीदगी दूर कर हँसते हुए) अमां, यह क्या ?

किशोर : (शोख़ी से) खतरे की घण्टी !

नसीम : बड़ी माकूल घड़ी है, (जाकर अलार्म बन्द करता है) ऐन वक्त पर आगाह किया है।

तारा : (किशोर पर हल्का व्यंग करके) आपके दोस्त साहब के कंवारपने की है।

किशोर : मगर ग़लत-सही की तमीज़ रखती है। इसकी खोपड़ी की तरह नही कि यह नौकरी छोड़े और वह अलार्म भी न बजाये।

नसीम : मगर बदनसीब बहुत गुमराह है। यह नहीं जानती है कि नसीम अलार्मों से डरने वाला नहीं है। (घड़ी देखकर) लेकिन यार, अब चला।

तारा : क्यों ? बैठिये तो···

नसीम : मुझे कुछ काम है भाभी, फिर आऊंगा।

(दरवाजे की तरफ जाता है।)

किशोर : (टोक कर) आयेगा ?

नसीम : क्यों ? नौकरी छोड़ी है, मुहब्बत तो नहीं छोड़ी।

तारा : शायरों का कोई भरोसा नहीं।

नसीम : यह क्या इलज़ाम लगाती हैं भाभीजान ? एक मुहब्बत के मामले में ही तो शायर भरोसे का होता है।

किशोर : बस-बस रहने दे···हमको मालूम है···

नसीम : (उसके मुँह से बात छीनकर) जन्नत की हक़ीक़त···मेरी नहीं। आदाबअर्ज़ !

(बड़ी शोख़ी से सलाम करके हँसता हुआ चला जाता है।)

किशोर : (सोफ़े पर बैठते हुए) कितना अच्छा आदमी है !

तारा : (व्यंग से) और औरत भी कितनी अच्छी है कि आदमी की नौकरी छुड़वा दी !

किशोर : मगर ग़लत क्या किया···अगर नौकरी से खुशी नहीं मिलती ?

तारा : (तड़क कर) कैसे नहीं मिलती ? ढाई सौ रुपये मिलते थे··· इज़्ज़त मिलती थी··· मेल बढ़ता था···

किशोर : किनसे कौन इज़्ज़त करता था ? सिर्फ़ वे दूकानदार जिनका एक ही काम है—बेईमानी से कमाना, रिश्वत देकर इन्कम टैक्स से बचना ।

तारा : आपको भी इसी एक बात का ख़ब्त रहने लगा है ।

किशोर : (तेज़ी से) हां; ज्यों-ज्यों मैं नौकरी करता जा रहा हूं, मुझे ख़ब्त होता जा रहा है ।

तारा : (व्यंगपूर्वक) तो आप भी नौकरी छोड़ दीजिये ।

किशोर : (गंभीरता से) अगर ज़िम्मेवारी न होती तो ज़रूर छोड़ देता ।

तारा : (भड़ककर) ज़िम्मेवारी से न डरिये । अपनी यह चाह भी पूरी कर लीजिये ।

किशोर : (चौंककर) तारा ! अब तुम अपनी और मेरी चाह में फ़र्क करने लगी हो ।

तारा : बेशक ! इस घर में अब एक ही आदमी की चाह पूरी होती है ।

किशोर : (विस्मय से) तारा !

तारा : (जलती निगाहों से देखकर) ग़लत कहा है ?

किशोर : (बुझ-सा जाता है) शायद नहीं··· (गहरा सांस लेकर) मैं तुम्हारी कोई चाह पूरी नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ग़रीब हूं । मेरे पास कुछ नहीं है ।

(बेहद उदास होकर शृंगार-मेज़ के स्टूल पर माथा पकड़ कर बैठ जाता है । तारा कुछ देर उसे देखती है । उसे यों बैठे देखकर मन में कोमलता का भाव पैदा होता है । उसे ज्ञात होता है उसने कठोरता से काम लिया था, इसलिए वह धीरे-धीरे चलकर उसके पास जा खड़ी होती है और कुछ देर तक चुप खड़ी रहकर)

तारा : अब गम्भीर हो गए !

(किशोर चुप रहता है।)

तारा : मुझ से माफ़ी मंगवाना चाहते हो ?

किशोर : (तड़प कर उसकी ओर देखते हुए) कभी-कभी तुम क्या कह देती हो ?

तारा : अच्छा ! अब मैंने अपने शब्द वापस लिये। अब जाओ (हाथ पकड़ कर उठाती है) ज़रा मेरे जूड़े में यह फूल ठीक से लगा दो। मेरा हाथ नहीं जाता।

(तारा शृंगार-मेज़ के पास आ खड़ी होती है, किशोर फूल लगाता है। फूल लगाने के बाद भी वह हटता नहीं—आइने में तारा को देखता रहता है।)

तारा : (शोखी से गर्दन मोड़कर उसकी ओर देखते हुए) ए, यह क्या है ? कभी देखा नहीं ?

किशोर : (गर्दन हिलाता है।)

तारा : (पलट कर हैरानी से) मुझे कभी नहीं देखा ?

किशोर : (गर्दन हिलाते हुए) इतना नहीं देखा कि देखने की चाह न रहे।

तारा : बड़ा प्यार उमड़ रहा है !

किशोर : यही तो एक दौलत है जो तुम पर लुटा सकता हूं।

(तभी बाहर से आवाज आती है।)

सेठ : इन्शपिक्टर साहब ! इन्शपिक्टर साहब !

(दोनों मुड़ कर दरवाज़े की ओर देखते हैं। किशोर तारा से "तुम अन्दर आओ" कह कर दरवाज़े की ओर बढ़ता है। एक सेठ अन्दर दाखिल होता है।)

सेठ : राम राम इन्शपिक्टर साहब !

किशोर : राम राम ! आप कौन हैं ?

सेठ : जी भोगीलाल विलासीराम।

किशोर : ओह तो आप हैं। पधारिये ! कहिये, आपके भोग-विलास के

लिए मैं क्या कर सकता हूं ?

सेठ : उसके लिए को ना शरकार। तीन-तीन सेठानियां हैं, पर तीनों तीन दिन से रो रही हैं।

किशोर : मगर किसलिए—आप तो भगवान् की दया से अभी काफी हट्टे-कट्टे हैं—

सेठ : (**बात काट कर**) न-न; भगवान् की दया से न कहो इन्शपिक्टर शाहब—बैद जी की दया से कहो। ऐसी-ऐसी भस्म देवें हैं कि कुछ मत पूछो। उन्हींके बूते पर तो छोटी सेठानी लाया हूं।

किशोर : तो क्या अब उन्होंने भस्म देनी बन्द कर दी ?

सेठ : अजी वो बन्द कर देंगे तो मेरे पास और पचासों बैद हैं। मैं तो आपकी किरपा···

किशोर : मगर सेठ जी, मेरे पास ऐसी कोई किरपा नहीं है।

सेठ : मैं ऐसी न चाहूं हूं।

किशोर : फिर आप कैसी किरपा चाहते हैं ?

सेठ : सरकार, वह जो आपने इन्कम टैक्स का नोटिस भेजा है···

(**जेब से नोटिस निकालता है।**)

किशोर : ओह, तो उसकी वजह से सेठानियां रो रही हैं।

सेठ : हां सरकार ! तीनों बेचारियां रो रही हैं। छोटी सेठानी के तो अभी आंसू पूछ कर आ रहा हूं।

किशोर : (**विनोद करते हुए**) लेकिन टैक्स तो आपको देना ही होगा।

सेठ : शरकार, इतना टैक्स देना पड़ा तो म्हारा तो हारट फेल हो जाएगा—वे सब की सब एकदम रांड हो जाएंगी। शरकार, मुझे इस संकट से बचा लो। मैं गंगा मैया की कशम खाके कहूं हूं, पांच साल से घाटा ही घाटा दे रहा हूं।

किशोर : (**बिगड़ कर**) तो इतना टैक्स यूं ही लग गया ?

सेठ : **(बात संभालते हुए)** यूं ही नहीं लगा शरकार, ये ग्रह के फेर हैं। पंडितजी कहें हैं कि भोगीलाल, तुझ पर मंगल की दिशा चढ़ी है। रवि के घर में शनि घुस आया और चन्द्रमा के घर में राहू आ बैठा है। केतु बुध से रूठ गया है और सोम बिरहस्पत से अड़ गया है।

किशोर : बड़ी घनघोर दिशा है फिर तो। कुछ उपाय करो सेठजी।

सेठ : **(ग़लत समझ कर)** उपाय करने की खातिर तो आया हूं शरकार! **(दरवाजे के बाहर आकर पुकारते हुए)** ओ मुनीम, मुनीमजी!

किशोर : **(हैरान होकर)** किसे आवाज़ देते हैं?

सेठ : मुनीमजी को शरकार—**(दरवाज़े के पास आकर)** तावड़ी आओ मुनीमजी!

मुनीम : **(अन्दर आकर)** जी सेठजी!

सेठ : वे सब कहां मर गए?

मुनीम : बाहर हैं शरकार।

सेठ : तो बुला लाओ न।

मुनीम : अभी लाया।

किशोर : **(और हैरान होकर)** किसे बुला रहे हैं आप?

सेठ : अभी देख लेना शरकार।

(दरवाज़े के बाहर झाँकता है। पहले एक मजदूर सोफा लिये दाखिल होता है, दूसरा क़ालीन लिये, तीसरा रेडियो लिये। तभी तारा अन्दर आती है।)

तारा : ये किसके हैं?

सेठ : आपके शरकार!

किशोर : **(भड़ककर)** क्या कहा?

सेठ : यह शिबकुछ आपकी भेंट है। **(घुटने के बल बैठकर)** अब ग्रह उतार दो शरकार!

किशोर : (गरज कर) ग्रह के बच्चे, बेईमान, इसी घड़ी यहां से निकल जा, वरना पुलिस को बुलाता हूं। निकल जा !

सेठ : शरकार !

किशोर : शरकार के बच्चे, दफ़ा हो जा—निकल जा।

(सेठ घबरा कर पीछे हटता है, फिर 'चलो-चलो' कहता मज़दूरों को लेकर बाहर निकल जाता है।)

(किशोर क्रोध से कांपता हुआ दरवाज़े से लौटता है।)

तारा : यह कौन था ?

किशोर : बेईमान, रिश्वत देने वाला था।

तारा : सोफ़ा, क़ालीन और रेडियो !

किशोर : (ज़ोर से) हां। लकड़ी, ऊन और प्लास्टिक से ईमान खरीदने आया था।

तारा : (क्रोध से, घृणा से) ईमान, ईमान, ईमान—मेरे तो कान पक गए हैं।

किशोर : (चौंककर) क्या ?

तारा : मेरे कान पक गए हैं।

किशोर : मेरे ईमान को सुनकर ?

तारा : हां तुम्हारे ईमान को, तुम्हारे आदर्श को, तुम्हारे संन्यासीपन को सुनकर—जिसने मुझे इस दुनिया की हर चीज़ से वंचित कर दिया है।

(तेज़ी से अन्दर चली जाती है। किशोर सन्नाटे में आया ऐसे खड़ा रह जाता है जैसे उसपर बिजली गिरी हो। कुछ क्षण बीतते हैं। दरवाजे पर दस्तक होती है। किशोर चौंक कर दरवाजे की तरफ़ बढ़ता है। रानी, जो तारा की पुरानी सहेली है, अन्दर आती है। वह एक मिलमालिक की पत्नी है।)

रानी : किशोर साहब का मकान ?

किशोर : जी, यही है।

रानी : किशोर साहब ?

किशोर : जी, मुझी को कहते हैं।

रानी : तारा आप ही की वाइफ हैं ?

किशोर : जी ! वे अन्दर हैं। तशरीफ़ रखिये। मैं अभी बुलाता हूं।

(अन्दर जाने के लिए मुड़ता है।)

रानी : कहिये, रानी आयी है।

(किशोर अन्दर जाता है। रानी कमरे पर नज़र डालती है। तभी तारा अन्दर के दरवाज़े पर नज़र आती है।)

रानी : **(पहचान कर)** तारा !

तारा : **(एक क्षण ठिठककर)** ओह रानी···!

(दोनों दौड़ कर एक-दूसरे से लिपट जाती हैं।)

तारा : तू यहां कैसे आयी ? **(किशोर से)** देखिये, ये हैं मेरी बहुत प्यारी, बहुत पुरानी सहेली रानी। और ये मेरे···।

रानी : **(मुस्कराते हुए)** मैं जानती हूं।

तारा : **(विस्मय से)** तू इन्हें जानती है ?

रानी : **(स्वच्छंद भाव से)** बिल्कुल ! किशोर अग्निहोत्री, इन्कम टैक्स इन्सपेक्टर सर्किल 'ए'।

किशोर : **(हैरान होकर)** आप कैसे जानती हैं ? मैं तो······

: आप मुझ से नहीं मिले; लेकिन मैंने आपको खोज निकाला—टेलीफ़ोन डायरेक्टरी से।

किशोर : **(हँसते हुए)** टैलीफ़ोन डायरैक्टरी से ?

रानी : जी हां। कल ही हमारे सैक्रेटरी ने टेलीफ़ोन डायरैक्टरी अमैंड करके दी। यूंही खोली, तो देखा अग्निहोत्री, इन्कम टैक्स इन्सपैक्टर। बस, कनैक्ट कर लिया।

तारा : **(न समझ कर)** वह कैसे ?

रानी : सुना था, तुमने इन्कमटैक्स के किन्हीं अग्निहोत्री साहब से शादी की है। इसलिए एक जासूस छोड़ा, उसने सुबह खबर

लाकर दी और मैं हाज़िर ।

किशोर : आपने तो वाक़ई कमाल कर दिया ।

रानी : देख लीजिये । मैं इसकी तरह नहीं हूं ।

तारा : (**कुछ लज्जित होकर**) मुझे क्या मालूम कि तुम यहां हो ।

रानी : यही तो फ़र्क़ है मुहब्बत-मुहब्बत का ।

(**किशोर को सहसा ज्ञात होता है कि सब खड़े ही हैं**)

किशोर : तारा, इन्हें खड़ा ही रखोगी ?

तारा : अरे, मैं तो भूल ही गई । आओ बैठो ।

रानी : नहीं, आज बैठूंगी नहीं । आप लोगों का लेने आयी हूं । बस, चलिये ।

तारा : लेकिन आज तो हमें··· (**किशोर की तरफ़ देखकर चुप हो जाती है ।**)

रानी : कुछ काम है ?

तारा : हां, बाज़ार जाना था—कुछ कपड़े लेने थे मारवाड़ी कटरे से ।

रानी : (**हैरानी से**) मारवाड़ी कटरे से ? वहां कपड़े मिलते हैं कि कतरनें ? मेरे साथ चल, टैलीफ़ोन करके अपने ड्रैपर को बुला दूंगी वहीं ।

किशोर : यह तो ठीक है ; लेकिन आज आपको हमें माफ़ ही करना होगा । हमें शाम को सिनेमा भी जाना है ।

रानी : किस सिनेमा में ?

किशोर : रीगल—६ बजे के शो में ।

रानी : (**खुशी से उछलकर**) वाह आज तो मेरे सारे स्टार्स फेवर में हैं । मेरे सब प्रोग्राम मिल रहे हैं । हमें भी ६ बजे के शो में रीगल जाना है । साथ चलेंगे ।

तारा : (**घबराकर**) लेकिन रानी, बात यह है कि···कि···

किशोर : (**गम्भीरता से**) वहां हमारा आपका साथ बैठना नहीं हो

सकता। हमारे पास सवा रुपये वाले टिकट हैं।

रानी : (**सहमकर**) आप लोअर स्टाल में बैठकर सिनेमा देखते हैं? और तारा को साथ लेकर? वहां वल्गर आदमी बैठता है।

किशोर : (**पूरी गम्भीरता से**) हम वल्गर तो नहीं। हां, आम आदमी ज़रूर हैं।

तारा : (**स्वर की गम्भीरता के लिए किशोर को आँख से ताड़ना देकर बात संभालते हुए**) बात यह है रानी कि इनके विचार अनोखे हैं। कहते हैं, आदमियों से नफ़रत कैसी! सिनेमा की ऊंची क्लासों में बैठने पर भी तो आम आदमियों के सांसों की गन्दी हवा हमारे फेफड़ों में जाती है।

रानी : (**लाजवाब होकर**) अजीब लाजिक है। लेकिन कोई बात नहीं—हमारे पास स्पेअर टिकिट हैं। तूम साथ चलो।

तारा : लेकिन रानी, पहले तुम कुछ देर बैठो तो। पहली बार मेरे घर आयी हो। कुछ खा-पीकर तो···

रानी : खा-पीकर जाऊं? तेरी मेहमान हूं मैं?

तारा : (**बौखलाकर**) मेहमान तो नहीं, पर बात यह है···

रानी : कि तेरा दिमाग़ खराब हो गया है। जीजा जी, आप तो मुझे मेहमान नहीं समझते?

किशोर : क़तई नहीं।

तारा : तो फिर उठिये और चलिये।

किशोर : लेकिन जिस बात से मेरे दिल पर बोझ रहे, वह आपको भी तो पसन्द न होगी न?

तारा : क़तई नहीं!

किशोर : तो फिर कुछ पी कर जाइयेगा।

रानी (**मुस्कराकर चपलता से**) बहुत खूब! तो ले आइये वह ठंडा-मीठा, जिससे आपके दिल का बोझ हल्का हो।

(**किशोर अन्दर जाता है।**)

तारा : (शिकायत के स्वर में) जीजा जी की मानी, मेरी नहीं !

रानी : तेरी ? तू कहां है ? क्या अब भी जीजा जी से अलग है ?

तारा : (हार मानकर) बड़ी बातूनी हो गई है।

रानी : (गर्व से) स्पैशियलाइज़ किया है। एक ट्यूटर रखा था।

(अन्दर से आकर)

किशोर : मुझे आज्ञा है ?

रानी : ज़रूर; मगर जल्दी आइयेगा। ऐसा न हो कि आपके दिल का बोझ उतर कर मेरे दिल पर सवार हो जाए।

किशोर : निश्चिन्त रहिये। तकल्लुफ नहीं करूंगा।

(बाहर आता है।)

रानी : हसबैंड तो छांट कर पसंद किया है, लेकिन तुझे क्या हुआ ?

तारा : क्यों, मुझे क्या हुआ है ?

रानी : श्याम के रंग में रंग कर सांवरी हो गई ?

तारा : क्यों ! काली तो मैं पहले ही थी।

रानी : ग़लत। इतनी दुबली भी न थी। प्रेम में सफल होकर भी यह हाल !

तारा : प्रेम में नहीं। बच्चा होने में···।

रानी : (खुशी से चमक कर) क्या तेरे बेबी भी है ? (उठ खड़ी होती है) कहां है ? तूने बताया क्यों नहीं ?

तारा : इनकी बुआ हैं। वो ले गई हैं आज ही सुबह।

रानी : क्या है—लड़का या लड़की ?

तारा : (कान के पास मुँह ले जाकर) लड़की।

रानी : ओह वंडरफुल ! सच, मुझे लड़कियां इतनी पसंद हैं कि क्या बताऊं।

तारा : तो तेरे कितनी हैं ?

रानी : एकदम··· (पहले हाथ की उंगलियां दिखाती है जैसे पांच हों; और फिर एक उंगली निकाल कर गोले में घुमाती है) सिफर।

तारा : (निराशा से बुझकर) एक भी नहीं ?

रानी : (गर्दन हिलाकर) लेकिन इस साल कान्टीनैंट का टूर लगा आऊं, फिर रहा कम्पीटीशन ।

तारा : (कानों को हाथ लगाकर) ना बाबा । मेरे बस का यह कम्पीटीशन नहीं है । एक ही डिलीवरी में जान पर आ बनी ।

रानी : उसकी अपने को चिन्ता नहीं है । यहां के थर्ड रेट अस्पतालों में मुझे नहीं जाना । मैं तो कान्टीनैंट में स्वीटज़रलैंड, या जर्मनी जाकर डिलीवरी कराऊंगी ।

(तभी किशोर दाखिल होता है । उसके साथ एक छोकरा ट्रे में कोका-कोला लाता है)

रानी : आह, सो थैंकफुल टू यू । आपने सचमुच देर नहीं लगाई ।

(आगे बढ़कर एक बोतल उठा लेती है ।)

किशोर : आपका हुक्म जो था ।

रानी : तो एक इनायत और कीजिये । अब फ़ौरन तैयार हो जाइये ।

किशोर : बस, तैयार ही समझिये ।

तारा : (घबराकर) क्यों कपड़े न बदलियेगा ?

किशोर : (हैरान होकर) कपड़े ? वो तो बदल लिये थे ।

तारा (एक नज़र रानी पर डाल कर) लेकिन कोट और टाई...

किशोर : (निर्णयात्मक स्वर से) भई, बस यही काम मुझ से न होगा । रानी जी, आप ही इन्साफ़ कीजिये कि इस गर्मी के मौसम में टाई और कोट पहनने से बड़ी सज़ा और क्या हो सकती है ?

रानी : सचमुच कोई नहीं हो सकती । तारा ! आजकल तो शर्ट और पैंट ही का फैशन है । टाई और कोट तो दवा बेचने वाले पहनते हैं ।

तारा : तो वह सिल्क की टरवेनाइज़्ड कालर की कमीज़ ही पहन जाइये । या वह भी तकलीफ़ देती है ?

किशोर : तारा, मुझे बनावट और दिखावे से ज़्यादा कोई चीज़ तकलीफ़ नहीं देती। **(सूती कमीज़ की तरफ इशारा करके)** इसमें क्या है ?

रानी : **(बीच में पड़कर)** इसमें कुछ नहीं है। तारा, जीजा जी इसमें बहुत अच्छे लगते हैं। अब आप लोग चलिये।

किशोर : मैं अन्दर से कमरा बन्द करके आता हूं। **(जाता है)** आप चलिये।

तारा : चलो रानी।

(पहले तारा और रानी जाती हैं। फिर किशोर अन्दर से बाहर आता है। मंच पर अँधेरा होता है। एक क्षण बाद जब लाइट ऑन होती है तो तारा और किशोर बाहर से अन्दर आते हैं। उनके कुछ कदम पीछे ड्राइवर बहुत-से डिब्बे उठाये आता है।)

तारा : **(ड्राइवर से)** डिब्बे यहां रख दो।

ड्राइवर : बहुत बेहतर सरकार !

(डिब्बे रखने में उसकी मदद करती है।)

तारा : और तो कुछ नहीं है न ?

ड्राइवर : दो डिब्बे सिल्कों के और हैं, बेबी साहब के लिए। मैं अभी लाता हूं।

(ड्राइवर डिब्बे रखकर बाहर जाता है।)

तारा : **(डिब्बे खोलते हुए खुशी से चहक कर)** देखिये, रानी ने कितना सामान दिया है ! **(एक डिब्बे को खोलती है)** देखिये, यह साड़ी मुझे दी है **(दूसरा डिब्बा खोलकर)** यह स्कार्फ और यह बैग है। और उसमें शायद आपके लिए हैं— **(खोलकर)** यह आपके लिए सूट है।

(मगर किशोर नहीं देखता। वह किताबों की अलमारी से एक किताब निकाल कर देखने लगता है।)

तारा : अरे, यह क्या ? मैं आप से कह रही हूं और आप किताब ले बैठे।

किशोर : **(गहरा सांस लेकर उदास लहजे में)** मैंने सब देख लिया है।

तारा : तुमने कहां देखा है ? अभी तो इतने ही डिब्बे और हैं।

किशोर : लेकिन उनमें क्या है, मैं अन्दाज़ा लगा सकता हूं।

तारा : देखना नहीं चाहोगे ?

किशोर : **(गम्भीरता से)** मुझे किसी दूसरे की चीज़ देखने की चाह नहीं है।

तारा : **(ज़ोर से हँसकर)** लो सुनो, ये दूसरे के हैं ?—ये तो रानी ने प्रैजेण्ट दिए—मेरी शादी पर नहीं दे सकी थी न।

(ड्राइवर कुछ और डिब्बे लेकर आता है।)

ड्राइवर : इन्हें कहां रखूं मेम साहब ?

तारा : यहां रख दो ड्राइवर।

ड्राइवर : बहुत बेहतर **(रखता है)** अब जा सकता हूं !

तारा : हां हां, अब जाओ। तुम्हें काफ़ी देर हो गई; लेकिन ठहरो ! **(किशोर से)** पर्स आपके पास है ?

किशोर : हां, यह रहा।

(आगे बढ़ कर देता है। तारा पर्स खोल कर पाँच रुपये का नोट निकालती है।)

तारा : यह तुम्हारा इनाम है।

ड्राइवर : **(सलाम करके)** शुक्रिया सरकार ! मगर मैं नहीं ले सकता।

किशोर : क्यों भई, तुम्हें क्या ऐतराज़ है ?

ड्राइवर : सरकार, मालकिन ने कहा है आप ग़ैर नहीं हैं। घर के लोगों से मैं बख़शीश नहीं लेता।

तारा : **(ज़ोर देते हुए)** लेकिन फिर भी···

ड्राइवर : मेम साहब, मैं मजबूर हूं। मेरे लायक और कोई काम हो तो···!

तारा : लेकिन यह तो रानी की ज़्यादती है।

ड्राइवर : **(बात खत्म करते हुए)** सरकार, आप ही का दिया खाता हूं।

रानी मेम साहब और आप में मेरे लिए कोई फ़र्क नहीं है।

रानी : **(नोट पर्स में रखते हुए)** अच्छा तो फिर रानी और जयन्त साहब को हमारा सलाम बोलना।

ड्राइवर : ज़रूर साहब। सलाम सरकार, सलाम सरकार !

तारा : सलाम।

किशोर : सलाम।

(ड्राइवर जाता है।)

तारा : देखा, रानी कितनी अच्छी है ! अपने में मुझ में कोई फर्क नहीं समझती। देखूं, बेबी के लिए खिलौने कैसे हैं। **(आगे बढ़ कर डिब्बा खोलती है।)** अरे देखिये, बेबी के लिए फर का कोट ! **(उसके हाथ में थमाती है।)**

किशोर : हां, बहुत अच्छा है **(जाकर सोफ़े पर बैठ जाता है।)**

(दूसरा डिब्बा खोलकर)

तारा : और ये इतने कीमती खिलौने। आप कल बेबी को ले आइयेगा। देखकर कितनी खुश होगी !

किशोर : **(किताब पढ़ते हुए)** हां, बहुत खुश होगी।

तारा : **(पास जाकर सोफे के हत्थे पर बैठकर किताब छीनते हुए)** पीछे पढ़ लीजियेगा। पहले यह बताइये, मेरी सहेली कैसी लगी ?

किशोर : अच्छी है।

तारा : घमण्ड तो तनिक नहीं है।

किशोर : हां। सिर्फ़ सोफिस्ट्री है।

तारा : **(उठते हुए)** वह तो होगी ही। इतने बड़े मिलमालिक की बीवी है। इतने बड़े लोगों से मिलना-जुलना है। लेकिन हम से तो ऐसा कुछ नहीं किया। मुझे अन्दर अपने कमरे में ले गई। मैं क्या बताऊं, कितना बड़ा बैड-रूम···कितना क़ीमती क़ालीन···कितने बड़े-बड़े वार्ड-रोब और उनमें सिल्क और

रेशम की कितनी क़ीमती, कितनी रंग-बिरंगी साड़ियां ! (हसरत से) सच, रानी सचमुच रानियों की तरह रहती है।

किशोर : (**उठकर किताब की अलमारी की तरफ़ जाते हुए**) वह तो रहेगी; क्योंकि उसका आदमी दूसरों की औरतों को बांदियों की तरह भी नहीं रहने देता।

तारा : (**चौंककर**) क्या ?

किशोर : (**पलटकर**) जानती हो, जो मोटी-मोटी धोतियां मैं तुमको बारह-बारह तेरह-तेरह रुपये में लाकर देता हूं, वे सब रानी के पति जयन्त की मिल की बनी हैं।

तारा : (**कुछ न समझकर**) तो क्या हुआ ?

किशोर : उन धोतियों की लागत मुश्किल से पांच रुपये होती है। पर जयन्त उन्हें दस और बारह रुपयों में बेचता है, ताकि दूसरों की बीवियां गूदड़ और उसकी बीवी रेशम पहन सके।

तारा : तुम तो हर एक पर शुबा करते हो।

किशोर : यह शुबा नहीं, सच है। जयन्त की मिल ने इस साल ३२ परसैंट तो डिवीडैंड बांटा है। मैंनेजिंग एजेंट जयन्त की छिपायी हुई आमदनी इससे अलग है।

तारा : (**चीज़ें संभालते हुए**) आप तो हर बात पर हिसाब-किताब और बही-खाते खोल बैठते हैं।

किशोर : क्यों न ले बैठूं ? दुनिया की हर चीज़ की तह में एक हिसाब-किताब है, हर हिसाब-किताब की तह में एक बही है और हर बही की तह में बेईमानी और छिपायी हुई रक़म है।

तारा : (**तुनककर**) फिर आप क्या करेंगे ?

किशोर : (**जोश में आकर**) मैं हर आदमी को चाहने से पहले उसका हिसाब-किताब देखूंगा। उसकी बही देखूंगा। और अगर मेरी ज़िन्दगी की तंगी का सम्बन्ध उसकी ज़िन्दगी की ऐयाशियों से निकला, तो मैं उससे मुहब्बत नहीं करूंगा।

तारा : आप न कीजिये ; पर जो मेरे साथ अच्छा करेगा, मैं उससे नफ़रत नहीं करूंगी। मैं रानी से सम्बन्ध नहीं तोड़ूंगी।

किशोर : मैं तोड़ने को नहीं कहता, लेकिन उसके जीवन के बाहरी रूप को ही न देखो, असली रूप को भी देखो।

तारा : **(बिगड़कर)** उनका क्या असली रूप देखूं ! वे कोई चोर, लुटेरे या खूनी हैं ?

किशोर : **(शब्द जमा कर)** शायद वे सब कुछ हैं।

तारा : **(चौंककर)** क्या कहा ?

किशोर : **(बलपूर्वक)**…कि वे चोर, लुटेरे और खूनी हैं; क्योंकि आज कल इसके लिए नक़ाब चढ़ाकर पिस्तौल चलाने या छुरा घोंपने की ज़रूरत नहीं। एक ज़रा भाव बढ़ाने से लोगों के लाखों सिक्के इनकी तिजोरियों में सिमटे चले आते हैं। एक ज़रा नफ़े के दांत गहरे गढ़ा देने से लोगों की रगों का सारा खून उनके चेहरे में उमंगों और ऐयाशियों की सुर्खी भरने लगता है।

तारा : **(विरोध करते हुए)** तुमको तो हर उस आदमी से नफ़रत है जो हँसी-खुशी रहता है।

किशोर : **(पूर्ण आवेश में)** नहीं; मुझे सिर्फ उस आदमी से नफ़रत है जो दूसरों की हँसी-खुशी पर जीता है। ये जितने लोगों से तुम आज मिल कर आयी हो, ये जितने शरीर आज रेशम और सिल्क में लिपटे हुए थे, सब बेईमानी और रिश्वत पर पलते हैं। ओह ! **(सहसा माथा पकड़ लेता है।)**

तारा : **(चिन्तित होकर)** क्यों ? क्या अभी तक सिर में दर्द हो रहा है ?

किशोर : नहीं। वैसे ही ज़रा हल्का-सा है।

तारा : **(माथा छूकर)** कहां। मांथा तो इतना गर्म है। अनासीन ले आऊं ?

(जाने लगती है।)

किशोर : (हाथ पकड़कर) नहीं-नहीं, इस वक्त बाहर मत जाओ। बस, थोड़ा माथा दबा दो। ठीक हो जाएगा।

(सोफ़े पर सिर टिका देता है।)

तारा : तो साथ-साथ बाम तो मल दूं। (तारा बाम लाकर बड़े प्यार से उसे माथे पर लगाने लगती है किशोर आंखें बन्द कर लेता है।)

किशोर : जब सिनेमा देखता हूं, दर्द हो जाता है।

तारा : दिन-रात दफ़्तर का काम कर-कर के आपने अपनी आंखें ख़राब कर लीं। मैं कहती हूं आप रात में काम क्यों करते हैं?

किशोर : (थके स्वर में) मैं क्या करूं? लोगों के ६० परसैंट खातों में छिपायी हुई रक़म होती है। उसे पकड़ने के लिए बड़ा मग़ज़ खपाना पड़ता है।

तारा : (कुछ अजीब-से स्वर में) न खपाया करो। केस छोड़ दिया करो।

किशोर : (उसकी ओर देखकर) वैसे ही।

तारा : कुछ ले लिया करो।

किशोर : (चौंककर ऐसे उठ बैठता है जैसे उसके किसी ने डंक मारा हो।) रिश्वत!

तारा : (बाम की शीशी बन्द करके श्रृंगार-मेज की ओर जाते हुए) रिश्वत तो दुनिया लेती है।

किशोर : (चौंक कर खड़ा हो जाता है) तारा—अगर शहर में ताऊन फैल जाए, तो क्या हर आदमी अपने गिलटी निकाल ले? अगर एक ईमान बेचता हो तो क्या हर आदमी के लिए ज़रूरी है कि वह भी अपने ईमान को बाज़ार में ला रखे?

तारा : लेकिन हम दुनिया से अलग नहीं रह सकते।

किशोर : ठीक है; लेकिन हम अपने दुश्मन भी तो नहीं बन सकते।

तारा : (हैरान होकर) दुश्मन?

किशोर : हां। जानती हो, रिश्वत लेकर केस छोड़ देने से क्या होगा? लोग और बे-धड़क होकर ब्लैक करेंगे। चीज़ें और महंगी हो जायेंगी। जीवन और कठिन हो जायेगा। रिश्वत लेकर हम उल्टे अपने-आप से दुश्मनी करेंगे।

तारा : यह कोरा खयाल है। जब तक नहीं लेते, तब तक सताता है।

किशोर : हां, फिर खयाल मर जाता है।

तारा : पर आदमी तो जी जाता है।

किशोर : (चौंककर) तारा...!

तारा : (विद्रोह के स्वर में) हां, मुझसे अब तरस-तरस कर नहीं जिया जाता। मुझे तुम्हारे खयाल नहीं चाहिए, आदर्श नहीं चाहिए। मुझे जीवन चाहिए जो आराम, रुपये और रेशम के लिए तरसते-तरसते ऐसा बे-रंग, बे-रूप न हो जाए जैसे मैं।

किशोर : (फटी-फटी आंखों से देखकर) यह तुम क्या कह रही हो?

तारा : जो मेरे जीवन का भयानक सच है। कभी मैं इस रानी के बराबर थी...उससे अच्छी थी। पर आज...तुम्हारे आदर्शों और खयालों की आंच में जलकर मेरा रंग धुआं हो गया, तन कोयला हो गया, कपड़े उसकी आया से भी गिर गए। मन के इस सौदे में मैं बुरी तरह लुट गई हूं।

(रोती हुई अन्दर चली जाती है।)

किशोर : तारा......!

(रोशनियां बुझ जाती हैं।)

दूसरा अंक
पहला दृश्य

(स्थान—रानी का शानदार ड्राइंग-रूम।)

[रानी डांस सीख रही है। रानी के डांसटीचर, जो मदरासी हो सकते हैं, नाच के बोल बोलते जाते हैं और रानी नाचती जाती है। तभी चक्रवर्ती अन्दर आते हैं। वे एक अंग्रेजी मैगजीन के एडीटर हैं।]

चक्रवर्ती : वाह-वाह, कमाल है, कमाल है ! रानी जी आपने कमाल कर दिया।

रानी : (रुककर) आइये-आइये ! रमन जी, आज इतना ही लैसन रहने दें।

रमन : जैसी आपका मर्जी !

रानी : (रमन जी से) आप कुछ पियेंगे ?

रमन : नहीं। हमारे का अभी एक और जगह जाना है। नमस्कार !

रानी : नमस्कार !

(रमन जी जाते हैं।)

रानी : कहिये ऐडीटर साहब ! आपका वीकली कैसे चल रहा है ?

चक्रवर्ती : रानी जी, आपकी बदौलत सेल माउण्ट होती जा रही है। अगर इसी तरह प्रोग्रेस होती रही तो आप देखियेगा, आपका यह वीकली, इलस्ट्रेटिड वीकली से टक्कर लेने लगेगा। जरा यह देखिये ! (खतों का एक बण्डल निकालता है।)

रानी : यह क्या है ?

चक्रवर्ती : फ़ैन मेल।

रानी : फ़ैन मेल ?

चक्रवर्ती : जी ! आपने पिछले इशु में जो आर्टिकल कण्ट्रीब्यूट किया था, उसे पढ़कर लोग पागल हो उठे हैं। उसे बार-बार छापने की डिमांड कर रहे हैं। एप्रीसिएशन के इन ख़तों से हमारा आफ़िस फ्लडिड हो गया है।

रानी : (हँसते हुए) सब आपके लिखवाये हुए हैं या कुछ लोगों ने भी लिखे हैं ?

चक्रवर्ती : (बौखलाकर) जी ! आप क्या कह रही हैं !

रानी : कुछ नहीं, सिर्फ़ आपकी बात दोहरा रही हूँ। आपने एक दफ़ा कहा था न जरनलिज़्म में यह भी चलता है।

चक्रवर्ती : (अपनी बात निभाने के लिए) चलता है, ज़रूर चलता है; पर आपके बारे में यह सब-कुछ करने की ज़रूरत नहीं। आपने जो आर्टिकल लिखा है, मैं चैलेंज करता हूँ, कोई ऐसा आर्टिकल लिख तो दिखाये। मैंने ऐसा आर्टिकल ही नहीं देखा, हालाँकि जरनलिज़्म के जंगल में इतनी उम्र घास खोदी है।

रानी : (दाढ़ी की तरफ़ इशारा करके) खोदी है या उगायी है ?

चक्रवर्ती : (दाढ़ी पर हाथ फेर कर) आप इसकी बात करती हैं! ही-ही ही; रानीजी, इसीका ख़्याल करके तो लोग अपने को बँगलों में घुस आने देते हैं। गुरुदेव को लाख-लाख धन्यवाद देता हूँ।

रानी : अच्छा; आप मेरे डांस के ऊपर जो आर्टिकल लिखवाने वाले थे, उसका क्या हुआ ?

चक्रवर्ती : बिल्कुल तैयार है। मैंने भी उस आर्ट-क्रिटिक से लिखवाया है, जिसने पिछली बार कमला लक्ष्मन को भी नहीं बख़्शा था। ऐसे गजब का आर्टिकल लिखा है कि धूम मच जाएगी।

रानी : और फ़ोटो ?

चक्रवर्ती : सब ब्लॉक-मेकर को दे दिए हैं। कवर पर फुल-पेज ट्राइकलर

फ़ोटो। तीन पेज का फर्स्ट आर्टिकल और सेण्टर-स्प्रेड पर मुद्राओं के पोज़। (**बैरा आता है और एक ट्रे रख कर चला जाता है जिसमें एक कार्ड रखा है। रानी उस कार्ड को पढ़ते ही उठ खड़ी होती है।**)

रानी : ओह, मैं तो भूल ही गई थी। चक्रवर्ती साहब, यह ठीक रहेगा, शुक्रिया! मुझे कुछ और काम है, इसलिए···

चक्रवर्ती : (**उठकर**) जरूर-जरूर! (**झिझकते हुए**) लेकिन रानीजी···

रानी : (**जाते हुए रुककर**) जी! कुछ कहना है?

चक्रवर्ती : (**गर्दन झुकाकर**) अगले इशु के लिए कागज नहीं है। पिछले की प्रिंटिंग का बिल नहीं चुका।

रानी : (**बिगड़कर**) क्या?

चक्रवर्ती : दो दिन से घर से नहीं निकला हूँ।

रानी : लेकिन आप तो कहते थे कि सेल माउण्ट हो रही है···पेपर इतना प्रोग्रेस कर रहा है···

चक्रवर्ती : (**धरती को ताकते हुए**) वह जरनलिज़्म था।

रानी : और असलियत?

चक्रवर्ती : अपनी मिलों के एडवरटाइज़मेंट दिला दीजिये।

रानी : लेकिन वो तो मैंने पिछली दफ़ा कह दिया था।

चक्रवर्ती : लेकिन रेट्स के बारे में नहीं; रेट तय करने के लिए मैनेजर साहब पूछते हैं कि कापियाँ कितनी छपती हैं।

रानी : ओह, सर्कुलेशन के हिसाब से पेमेंट दिया जाता है। अच्छा-अच्छा, मैं जयन्त साहब से कहकर आपको फुल रेट्स पर एड-वरटाइज़मेंट दिला दूंगी।

चक्रवर्ती : आपकी बहुत कृपा होगी। नमस्कार!

रानी : नमस्कार!

(**चक्रवर्ती जाता है। रानी कोने में फ़ोन करने जाती है, तभी तारा आती है।**)

तारा : रानी !

रानी : ओह माई डार्लिंग (फ़ोन रख कर उसकी तरफ़ बढ़ती है।) आइ वाज़ गोइंग टु रिंग अप जीजाजी अबाउट यू। इतनी देर कैसे कर दी ?

तारा : घर से निकलते-निकलते देर हो गई।

रानी : अच्छा बैठ। बैरा··· (आवाज़ देकर) बता, क्या पियेगी ?

तारा : कुछ नहीं। मैं तो नाश्ता करके आ रही हूँ।

रानी : बक-बक मत कर। (बैरा आता है।) देखो, काफ़ी एण्ड कैश्यूनट्स।
(बैरा गर्दन झुकाकर चला जाता है। दोनों सोफ़े पर जा बैठती हैं।)

रानी : और क्या ठाठ है ? मेरी यह ड्रैस देखी ?

तारा : बड़ी स्मार्ट है। पर कैसे पहनी ?

रानी : डांस कर रही थी।

तारा : तू डांस भी करने लगी है ?

रानी : मैंने भारत नाट्यम् सीखा है। अगले वीक के 'लाइट आफ़ एशिया' में मेरे ऊपर एक आर्टिकल निकल रहा है, फ़ोटोज़ के साथ।

तारा : (विस्मय से) अच्छा ! (मेज़ पर अखबार देखकर) इसमें ? (अखबार उठा लेती है।)

रानी : हूँ। इस इशु में तो मेरा एक आर्टिकल है।

तारा : तेरा ? तू राइटर भी बन गई !

रानी : अरे, क्या करूँ। पड़े-पड़े बोर हो जाती हूँ। आर्ट-लिटरेचर के सहारे वक्त कट जाता है।

तारा : (तारा आर्टिकल देखती है।) अरे, बड़ी सुन्दर अंग्रेज़ी लिखी है।

रानी : मेरे कण्ट्रीब्यूशंस तो अमेरिकन मैगज़ीन में भी छपते हैं।

तारा : (हैरानी से) अमेरीकन मैगज़ींस में !

रानी : हाँ। हर महीने मैं एक इंडियन डिश का रैसिपि लिख कर भेजती हूँ।

(बैरा आता है और ट्रे रखता है।)

रानी : देखो बैरा, वो हमारे अमेरिकन मैगज़ीन की फाइल उठाओ।

(बैरा फ़ाइल उठाकर देता है।)

रानी : देखो, दरबान दो घण्टे की छुट्टी लेकर गया है। तुम बाहर बैठो, कोई आये तो उससे कहो—लिख कर भेजे कि क्या कहना है।

(बैरा चला जाता है।)

रानी : (फ़ाइल खोलकर देते हुए) देख, ये हैं मेरे रैसिपीज़ ।

तारा : (देखकर) अरे ! सच, तू तो बहुत ही बढ़िया लिखती है।

रानी : और तुझे क्या हुआ ? (कॉफी बनाकर देती है।) कालिज के ज़माने में तू मुझसे ज़्यादा इंटेलिजैंट और स्मार्ट थी। मैं अपने टीचर से लिखवाकर मैगज़ीन में आर्टिकल छपवाती, मगर तू आप ही इतने अच्छे लिखती। भला घर के धन्धों में अब तूने अपने को इतना क्यों फँसा लिया ?

तारा : (उदास होकर) क्या करूँ, काम तो करना ही पड़ता है !

रानी : नौकर क्यों नहीं रख लेती ?

तारा : नौकर ? सस्ता मिलता नहीं, महँगा रख नहीं सकते।

रानी : जीजाजी क्या पाते हैं ?

तारा : ढ़ाई सौ।

रानी : ओह, यह तो कुछ नहीं है। दो सौ तो मैं अपने ड्राइवर को देती हूँ।

(तभी बैरा आता है और ट्रे में एक अर्ज़ी पेश करता है। अर्ज़ी पर निगाह डालकर)

रानी : यह वो आदमी है जो परसों आया था ?

बैरा : जी।

रानी : उससे कहो, कल सुबह साहब से मिल में मिले। तीन सौ रुपये पर उसका अपाइंटमेंट कर लिया जाएगा।

(रानी अर्ज़ी पर लिखकर अर्ज़ी बैरे को दे देती है, बैरा चला जाता है।)

रानी : महीने-दूसरे महीने में तो एक-दो आदमियों को नौकर रखती ही रहती हूँ। मैं तो पढ़े-लिखे आदमी को दो-ढ़ाई सौ पर रखने की बात भी नहीं सोच सकती।

तारा : (गहरा साँस छोड़ कर प्याला रखते हुए) हाँ, होना तो यही चाहिए। मगर सरकारी नौकरियों में स्केल बँधे होते हैं।

रानी : तू काम क्यों नहीं करती ?

तारा : (चौंक कर) मैं !

रानी : हाँ। क्या जीजाजी मना करते हैं ?

तारा : (जल्दी से) नहीं तो। वो तो कुछ नहीं कहते; मैं ही···

रानी : अरे, तू अपने इस खोल से निकल (टेलीफ़ोन की घंटी बजती है) अभी आयी। (फ़ोन पर जाकर) येस ! ओह मिसेज़ रैना, हाऊ डू यू डू ? फ़ाइन, फ़ाइन। हाँ। क्या ? प्राइम मिनिस्टर ने इनवीटेशन ऐक्सैप्ट कर लिया ? ओह ग्रैण्ड ! तब डिप्लोमैटिक कोर को भी इनवाइट कर लो। लैट ईट बी ए ग्रैण्ड फंक्शन। येस···येस ! ओह श्योर ! विल कम···येस ···बाइ-बाइ···

(फ़ोन रखकर तारा के पास आती है।)

रानी : (खुशी से नाचते हुए) ओह तारा, तू भी चलना मेरे साथ।

तारा : (कुछ न समझकर) कहाँ ?

रानी : हमने पैलैस्टाइन के अरब रिफ़्यूजी बच्चों के लिए कपड़े और खिलौनों के गिफ़्ट जमा किये हैं। कल के फंक्शन में प्राइम मिनिस्टर उन्हें यूनीसैफ़ के रिप्रेज़ैण्टेटिव को हैण्ड-ओवर करेंगे।

तारा : (हैरान होकर) यानी प्राइम-मिनिस्टर खुद आयेंगे ?

रानी : (बड़े सहज भाव से) और क्या ! अरे, हम तो तीसरे-चौथे महीने ऐसे फंक्शन करते रहते हैं जिनमें कभी प्रेज़ीडेण्ट, कभी प्राइम-मिनिस्टर, कभी डिप्लोमैटिक कोर पार्टीसिपेट करते हैं। ये देख, **(उठकर मेज के पास जाती है और एक फोटो-ऐल-बम उठाकर लाती है।)** हमने एक कैफ़िटेरिया खोला हुआ है, जहाँ लोगों की ईटिंग हैबिट्स बदलने के लिए मोटे अनाजों की चीज़ें बनायी जाती हैं। पिछले दिनों प्रेसिडेण्ट ने विज़िट किया। मेरे साथ उनका फ़ोटो यह है।

(तारा हैरानी से फोटो देखती है।)

तारा : प्रेसिडेण्ट तो तुझसे बातें कर रहे हैं !

रानी : और क्या, मैं आर्गनाइज़र जो हूँ।

तारा : (फ़ोटो रखकर) सच, तूने तो अपना जीवन बना लिया।

रानी : तू भी बना सकती है। अबसे तू मेरे साथ रहा कर। जहाँ मैं जाऊँ, वहाँ चला कर। सुना !

तारा : लेकिन बेबी…

रानी : (तेज़ी से) बेबी को आया नहीं सँभाल सकती ? **(फिर याद करके कि उसके पास आया नहीं है)** मेरी आया को तो कोई काम नहीं। हरामखोर बस मेरी बिल्लियों की पीठ सहलाती रहती है। बेबी को वह देख लिया करेगी।

(तभी गिरीश दाखिल होता है। उसने बहुत उम्दा सूट पहना है और सिर पर सफेद स्ट्रा हैट है।)

गिरीश : (हैट हाथ में लेकर) बी-वेअर लेडीज़। हीअर कम्स डॉन जुआ !

रानी : (हँसकर) ओह गिरीश !

गिरीश : (बनावटी हैरत से) अ र र र…चाँद के पहलू में तारा।

रानी : और सचमुच का तारा ! (हँसते हुए) तारा, ये हमारे यहाँ

के सबसे अनोखे जानवर हैं।

(तारा अनजान होने के नाते अपनी हँसी रोकने की कोशिश करती है।)

गिरीश : न-न, मुस्कराहट को रोकने की कोशिश न कीजिये तारादेवी ! मुस्कराइये और अपने इन मोतियों-से दाँतों को सुर्ख-सुर्ख होंठों के दरमियान जगमगाने दीजिये। **(अपना सफेद हैट हाथ में लेकर घुटनों के बल तारा के आगे बैठते हुए, किन्तु रानी की तरफ देखते हुए)** रानी, तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं फ्रांसीसी कहानी का वह राजकुमार हूँ जो जानवर के भेस में उस घड़ी की बाट जोह रहा है जब कोई सुन्दर राजकुमारी आये और अपने होंठों से······

रानी : बस बस बस ! अपने घुटनों से उठ जाइये और हैट सिर पर रख लीजिये; क्योंकि ये वो राजकुमारी नहीं है। ये मिसेज़—

गिरीश : **(बेहोश होने का नाटक करते हुए)** मिसेज़ तारादेवी ! आपने यह क्या ज़ुल्म किया ? थोड़ा इन्तज़ार कर लिया होता।

रानी : **(हँसते हुए)** तुम्हारा आज तक किसी ने इन्तज़ार किया है ?

गिरीश : **(बनावटी तौर पर लहजा गिराकर)** सच, किसी ने नहीं किया रानी, किसी ने नहीं किया। मैं हर जगह देर से पहुँचता हूँ।

(तभी अन्दर से रानी का पति जयन्त आता है। मुँह में पाइप। बदन पर नाइट गाउन। चेहरे पर शेव का साबुन लगा हुआ।)

(ख़ामोशी से नमस्ते करता है। तारा भी हाथ जोड़कर नमस्ते करती है।)

जयन्त : और हम ?

गिरीश : तुम ? जयन्त, तुम हमेशा हर जगह ठीक वक्त पर पहुँचते हो। तुम्हारा मेरा मामला उलटा है। तुम वक़्त का ख़ून करते हो, लेकिन वक़्त मेरा ख़ून करता है।

जयन्त : यह क्या फ़िलासफ़ी है ?

गिरीश : यह फ़िलासफ़ी नहीं है। ज़रा देखो, दो बजने को आए हैं, और तुम अभी शेव बनाकर नहाने का इरादा ही कर रहे हो...वक़्त का इतना खून करते हो, फिर भी सब-कुछ तुम्हारे पास है।

जयन्त : और तुम्हारे ?

गिरीश : देख लीजिये; अभी ताराजी के आगे झुका था कि उठा दिया गया।

जयन्त : वो तो तुम हमेशा उठा दिए जाते रहोगे गिरीश। तुम हर चीज़ कमीशन पर हासिल करना चाहते हो और बीवी कमीशन का नहीं मानोपोली का मामला है।

(रानी जोर से हँसती हैं। तारा मुस्कराती है।)

गिरीश : रानी, देखो, जयन्त फिर मेरा अधूरा इण्ट्रोडक्शन देकर मुझे बदनाम कर रहा है।

रानी : पूरा इण्ट्रोडक्शन चाहते हो, तो सुनो। तारा, ये हैं गिरीश—ऐक्सपोर्टर, इम्पोर्टर, कमीशन ऐजेंट, बिज़नेस रिप्रिज़ैण्टेटिव, बीमा ऐजेंट और न जाने क्या-क्या। हम तो बस यह जानते हैं कि जो काम किसी से न हो, इन्हें कमीशन दो और करा लो। बेहद ज़िन्दादिल आदमी हैं।

गिरीश : शुक्रिया, इस कंप्लिमेंट के लिए शुक्रिया रानी। और ताराजी का......

रानी : वह भी लीजिये। आप हैं तारा, मेरी बहुत पुरानी सहेली। पाँच साल बाद मिली हैं।

गिरीश : और वो, जिन्होंने मुझसे ज़रा देर पहले आकर......

रानी : ...इनको वर लिया ? वो हैं किशोर अग्निहोत्री, इन्कमटैक्स इन्सपैक्टर।

गिरीश : (एकदम चौंक कर) क्या ? किशोर अग्निहोत्री ! इन्कमटैक्स इन्सपैक्टर ! तो आप......

रानी : ···उनकी बीवी हैं। कोई ऐतराज़ ?

गिरीश : (बात सँभालते हुए खिसिया कर) मुझे···रानी, मुझे क्या ऐतराज़ हो सकता है। (फौरन नाटकीय ढंग से शेर कहता है)

जो दिल किसी के साज़ की मिजराब जा बने;
हासिल कभी हुआ किसी ख़ानाख़राब को।

जयन्त : हैं-हैं, शेर भी कहने लगे !

रानी : कोई शायर हाथ लग गया होगा।

जयन्त : सचमुच कमीशन में मिला हुआ शेर मालूम होता है।

(सब हँसते हैं, तभी बैरा दाख़िल होता है।)

बैरा : साहब !

जयन्त : (रूखे लहजे में) क्या है ?

बैरा : असिस्टेंट डायरेक्टर सिविल सप्लाईज़ का आदमी गाड़ी लेने आया है।

जयन्त : दे दो।

बैरा : कौन सी साहब ?

जयन्त : शैवरले दे दो।

(बैरा गर्दन झुका कर चला जाता है।)

रानी : उनकी गाड़ी को क्या हुआ ?

जयन्त : दिखाने के लिए रख रखी है; इस्तैमाल दूसरों की करते हैं। अरे हाँ, याद आया; गिरीश मेरे साथ आओ, कुछ बातें करनी हैं।

(जयन्त गिरीश को अन्दर ले जाता है।)

गिरीश : (जाते-जाते मुड़कर तारा की ओर संकेत करके रानी से) आप अभी तो हैं ?

रानी : जायेंगीं तो तुम्हें बुला भेजूंगी।

गिरीश : शुक्रिया ! (जयन्त के साथ अन्दर चला जाता है।)

तारा : यह कैसा आदमी है···हर किसी के साथ कैसी बातें करने

लगता है।

रानी : अरे, इसकी बातों का बुरा न मानना··हर किसी से पहली मुलाक़ात में फ़्री हो जाना इसकी आदत है। वैसे दिल का बिलकुल साफ़ और खुला है। हर सैटरडे को क्या शानदार पार्टियाँ देता है!

तारा : पर किसलिए?

रानी : अपने लिंक्स बढ़ाने के लिए।

तारा : लिंक्स?

रानी : हाँ; इसका काम ही इस तरह चलता है। जितने ज़्यादा अफ़सरों और बड़े लोगों से कनैक्शन बनते हैं, इसका बिज़नेस बढ़ता है।

तारा : वो कैसे?

रानी : अरे, प्लैन है। केस ठीक कराने, परमिट दिलाने या कोटा अलाट कराने के लिए अफ़सरों से जान-पहचान ज़रूरी है। पार्टियों में उनसे जान-पहचान बढ़ाता है, दफ़्तरों में जाकर काम कराता है।

(बैरा आता है और ट्रे उठाकर ले जाता है।)

तारा : कोई आफ़िस खोल रखा है इसने?

रानी : आफ़िस—अरे देखेगी तो आँखें फट जायेंगी—पूरे पचास आदमियों का स्टाफ़ है। चार-चार तो लेडी-रिप्रिज़ैंटेटिव हैं।

तारा : **(आश्चर्य से)** लेडी रिप्रिज़ैटेटिव! वो किसलिए?

रानी : दफ़्तरों में जाकर काम कराने के लिए। गिरीश अफ़सरों से उनका इण्ट्रोडक्शन करा देता है। वे दफ़्तरों में जाती हैं। अफ़सरों के साथ दो-चार घण्टे हँस-बोलकर अपना काम करा लाती हैं। मन का मन बहल जाता है, महीने के तीन-चार सौ अलग खरे हो जाते हैं।

तारा : **(विस्मय से आँखें फट जाती हैं)** गिरीश उन्हें तीन-चार सौ

रुपये महीना देता है ?

(टेलीफ़ोन की घण्टीबजती है। टेलीफ़ोन की ओर जाते हुए)

रानी : अरे, इस मामले में वह बड़ा सच्चा है। (टेलीफ़ोन उठाकर) यस-यस, आई एम स्पीकिंग। नो, आई एम सॉरी। आई कैन नोट इनागुरेट यौर शो। आई एम अटैंडिंग ए फ़ंक्शन व्हेअर प्राइम-मिनिस्टर इज़ कमिंग। यस, आई एम सारी···दैटस ऑलराइट। (टेलीफ़ोन रखकर) मैं क्या कह रही थी ?

तारा : यही कि गिरीश इस मामले में बड़ा सच्चा है।

रानी : हाँ, इसका एक केस मैंने ठीक कराया था। अगले ही दिन एक सन-बीम टू-सीटर खड़ी कर गया।

तारा : यह जो तुम चलाती हो ?

रानी : बिलकुल; इसी की दी हुई है।

(गिरीश आता है।)

गिरीश : क्या दी हुई है ? यह किसका ज़िक्र हो रहा है ?

रानी : बता दे तारा ?

तारा : (शर्माते हुए) फ्रांसीसी कहानी के राजकुमार का।

गिरीश : (नाटकीय ढंग से) सच ?

रानी : तुम्हारी ईमानदारी की तारीफ़ कर रही थी।

गिरीश : (मुँह बनाकर) ओह; रानी, तुमने भी किस चीज़ की तरीफ़ की। तारीफ़ ही करनी थी तो किसी ख़ूबी की करतीं।

तारा : क्यों ? ईमान्दारी ख़ूबी नहीं है।

गिरीश : (गंभीर होकर) ईमानदारी और ख़ूबी ! ···तारादेवी, यही तो एक बीमारी है जो बढ़े हुए टॉंसिलस की तरह इन्सान को न जीने देती है, न मरने। इससे जितनी जल्दी छुटकारा मिल जाये, अच्छा है।

रानी : (विनोदपूर्वक डाँटते हुए) तुम फिर उसी अपनी मारबिड फ़िलासफ़ी पर आ गए !

तारा : यह मारबिड तो नहीं है !

रानी : क्या ?

तारा : जो कुछ कह रह रहे हैं, ग़लत तो नहीं कह रहे !

गिरीश : (फ़ौरन घुटनों के बल बैठकर ईसाइयों की तरह अपने माथे और सीने को छूकर) ओ माई गॉड ! तू बड़ा रहमदिल है ! आखिर तूने मेरा एक क़द्रदान तो भेजा।

रानी : (मज़ाक में उठकर) फिर मैं चली किशोर साहब को फ़ोन करने।

तारा : (हँसकर) क्यों ?

रानी ; क्योंकि इन्फ्लुएन्ज़े की वैक्सीन निकल सकती है, लेकिन गिरीश के इन्फ़ैक्शन की··· (मुँह गंभीर बनाकर सिर हिलाती है। सब हँसते हैं। तभी बैरा आता है।)

बैरा : मेमसाब, लंच लग गया।

रानी : साहब बाथ से आ गए ?

बैरा : जी।

रानी : चलो तारा।

तारा : (गिरीश की ओर देखकर) और आप ?

रानी : ये लंच नहीं खाते। (गिरीश की ओर मुड़कर) क्यों गिरीश ?

गिरीश : जी जनाब, बन्दा सिर्फ़ एक चीज़ खाता है (सोफ़े पर बैठते हुए) कमीशन। (दोनों हँसती चली जाती हैं। गिरीश गुनगुनाता हुआ सिगरेट सुलगाता है कि सेठ भोगीलाल और उनका मुनीम अन्दर प्रवेश करते हैं।)

सेठ : (लगभग विलाप के स्वर में) ग्रीसजी !

गिरीश : (चौंककर) कौन सेठ भोगीलाल !

सेठ : (उसी स्वर में) ग्रीसजी, म्हारे नं बचा लो···म्हारे बचा लो !

गिरीश : (कठोरता से) क्या हुआ ?

सेठ : म्हारे नं मर गए, म्हारे नं कहीं के न रहे।

गिरीश : (झल्लाकर) मगर कुछ कहो तो !

सेठ : (मुनीम की ओर देखकर) कहो न मनीमजी, जल्दी कहो। म्हारा त जी डूबा जासै ।

मुनीम : शरकार, सेठजी पर टैक्स लग गया।

गिरीश : (झुँझलाकर) मगर यह कौन-सी नयी बात है ? टैक्स तो आये-साल लगता ही है !

सेठ : पर शाठ हिजार कोई नं लगता। हर शाल दस-पाँच हिजार में पिंड छूट जावै था। पर बेड़ा गर्क हो नए सिप्पटर का—जने कहाँ से दानी-धर्मात्मा आन मरा—सोफा, कलीन, रेडियो, सब देने गया, पर नई माना। अब तम्हीं उसे मनाओ। मैं ढूंढ़ता-ढूंढ़ता तम्हारी सरन में आया हूँ।

गिरीश : (बिगड़ कर) पर आप मेरे आफिस में आ सकते थे; यहाँ दूसरे के घर पर आने की क्या ज़रूरत थी ?

सेठ : जरूरत थी तभी तै पता ले के यहाँ आया सूँ ग्रीसजी। मेरी तीनों सेठानियाँ रो रही हैं। तम उन्हें चुप करा दो।

गिरीश : (चकराकर) उन्हें चुप करा दूँ !

मुनीम : हाँ शरकार ! टैक्स से बचवा दो। सेठजी अन्न-पानी ले ले, तो सेठानियाँ भी चुप हो जायेंगी।

गिरीश : (समझकर) ओह ! आफ़ीसर कौन है ?

सेठ : (सहमकर) अजी वो आफीसर ना है—सनीचर है। मैं सनीचर का नाम कोई ना लूँ। मनीमजी, तम्हीं बताओ।

मुनीम : शरकार, किशोर अग्निहोत्री है।

गिरीश : (चौंककर) कौन ! किशोर अग्निहोत्री !

सेठ : हाँ, ग्रीसजी, वही है। तम उसे जानो सो ?

गिरीश : (व्यापारिक मूड में आकर) सेठजी, जानने की कोशिश करूँगा। पर यह बताओ, कमीशन कितना दोगे ?

सेठ : (कान पर हाथ रखकर बहरा बनने का नाटक करते हुए) कमीसन ··कमीसन ! मनीमजी, ये ग्रीसजी क्या कह्वें हैं।

गिरीश : (कठोरता से) सेठजी, बहरे बनने से काम नहीं बनेगा। मुझे बीस हज़ार देना होगा।

सेठ : (उछलकर) क्या ! बीस हिजार !

गिरीश : अगली दफ़ा दोहराइयेगा तो इक्कीस हज़ार !

सेठ : (गिड़गिड़ाते हुए) पर पिछली बार तो तमने···

गिरीश : (कठोर स्वर में) पिछली बार आपका एक क़ाग़ज़ी बादाम से वास्ता था, जिसका खोल रिश्वत के तेज़ाब में पड़-पड़कर गल गया था। इस बार आपका इन्कमटैक्स इन्सपैक्टर कट्ठा बादाम है। उसे तोड़ने के लिए चाँदी के ज़्यादा मज़बूत दाँत चाहिए।

सेठ : (मुनीम को एक तरफ ले जाकर) फिर क्या कहो हो मनीमजी ? तम तो कुछ सलाह ना देते।

मुनीम : मान जाओ सेठजी ! साँप मरवाने की खातिर नेवला पालना ही पड़ेगा।

सेठ : (सोचते हुए) क्या कहा ? नेवला पालना ही पड़ेगा; तो फिर पाल लो नेवला मनीमजी, पाल लो। छोटी सेठानी तो चुप हो।

मुनीम : (गिरीश के पास जाकर) फिर आप केस ठीक करा दो शरकार।

गिरीश : तो पेशगी ?

मुनीम : (दौड़कर सेठजी के पास जाकर रोने-से स्वर में) सेठजी, पेसगी माँगें हैं।

सेठ : क्या कहा पेसगी ! दे दो मनीमजी (कान के पास मुँह ले जाकर) आज जो ब्लैक के पाँच हजार लाये हो, दे दो। (जोर से) यह कलजुग नहीं है—आज-जुग है—यहाँ उधार कोई ना चलता।

(मुनीम रुपये देता है।)

गिरीश : शुक्रिया सेठजी ! आज ही से काम शुरू हो जाएगा।

सेठ : पर काम तो हो जागा ?

गिरीश : आप से १५ हज़ार और लेने हैं; इसलिए फ़िक्र अब आपकी नहीं, मेरी है।

सेठ : अच्छा ग्रीसजी।

गिरीश : जाइये आप।

मुनीम : चलो सेठजी।

(सेठ बाहर जाता है। गिरीश रुपये लेकर अन्दर चला जाता है। रोशनी बुझ जाती है।)

दूसरा दृश्य

(वही कमरा, टैलीफ़ोन की घण्टी बजती है। बैरा उठाता है।)

बैरा : जी हाँ ! अभी बुलाता हूँ (अन्दर जाता है। कुछ देर बाद जयन्त आता है।)

जयंत : हैलो—कौन ? कमीशन एजण्ट। अबे, रात को नींद भी आई या कि सोते में भी कमीशन के छीछड़े ही देखता रहा।··· क्या ?···अबे, कह दिया कि किशोर को बुलाया है। बात करूँगा। राह पर लाने की कोशिश करूँगा। लेकिन याद रहे, अगर मुझे लाइसेंस न मिला तो इस केस का सारा कमीशन रखवा लूँगा।···क्या ? आना चाहता है ? आ जा; तब तक वो भी आ चुका होगा। यस।

(तभी ड्राइवर अन्दर जाता है।)

ड्राइवर : साहब ! साहब को ले आया।

(किशोर दरवाज़े में नजर आता है)

जयन्त : **(टेलीफ़ोन रखकर)** आइये किशोर साहब, आइये !

किशोर : **(हाथ मिलाते हुए)** शुक्रिया !

जयन्त : तशरीफ़ रखिये ! आप तो एक बार आने के बाद आये ही नहीं। हमने कहा, हमीं याद करलें।

किशोर : मैं शर्मिन्दा हूँ। दरअसल काम बहुत रहता है, सिर उठाने की फ़ुरसत नहीं मिलती।

जयन्त : यह मैं समझता हूँ। लेकिन गवर्नमेंट आफ़िसेज़ में रात को कब से काम होने लगा कि आपको पार्टियों में आने की भी फ़ुरसत नहीं मिलती ?

किशोर : **(कुछ झेंपकर)** क्या बताऊँ ! ज़्यादातर बहीखाते घर लाने पड़ते हैं। रात ही को देखता हूँ।

जयन्त : रात को देखते हैं ? **(उसकी आँखों में आँखें डालकर)** आपको रातों पर रहम नहीं आता ?

किशोर : **(वैसे ही जयन्त की आँखों में देखते हुए)** रात के इस्तैमाल से अगर दिन का उजयारा कुछ ज़्यादा हो जाए, तो मुझे रात गँवाने का ग़म नहीं होता।

जयन्त : **(मात खा जाता है पर अपनी मात छिपाने के लिए)** आप शायरी ख़ूबसूरत करते हैं।

किशोर : यह शायरी का नहीं, ईमान का मामला है।

जयन्त : रात को बहीखाते देखना ? लोगों पर ज़्यादा टैक्स लगाना ?

किशोर : नहीं, सिर्फ़ मेहनत और ईमानदारी से इतना टैक्स लगाना कि किसी पर जुल्म न हो, सरकार का हक़ तल्फ़ न हो।

जयन्त : **(उठकर उस पर झुकते हुए, उसकी थाह मालूम करने की नीयत से)** यानी अगर हम आपके हाथ लग जाएँ, तो आप हमें भी न बख़्शें ?

किशोर : मैं तो टैक्स का हिसाब लगाने वाला हूँ। बख़्शना या छोड़ना मेरे हाथ में कहाँ !

जयन्त : ग़लत किशोर साहब, आपके हाथ में सब-कुछ है !

किशोर : तो फिर उस तरह है जिस तरह आप का सारा पैसा खज़ांची के हाथ में रहता है। लेकिन अगर वो उसे बख्शे या खैरात में दे, तो आप खयानत क़रार देंगे।

(**बैरा कॉफ़ी लेकर आता है।**)

जयन्त : (**फिर मात खाकर**) ओह, हम भी किस बहस में पड़ गए। आइये, काफ़ी पियें। यह ज़्यादा स्टिमुलेटिंग होती है।

किशोर : (**उमंगपूर्वक**) मगर बहस अपनी जगह है !

जयन्त : यानी आप बहस के क़ायल हैं ?

किशोर : खिलाफ़ आप भी मालूम नहीं देते।

(**दोनों हँसते हैं। जयन्त कॉफ़ी बनाकर देता है। तभी घण्टी बजती है।**)

जयन्त : माफ़ कीजिये......। (**उठकर फ़ोन की तरफ जाता है।**) हैलो वर्मा साहब ! ओह, हाऊ आर यू...वैरी फ़ाइन...शी टू इज़ फ़ाइन...क्या ? मेरा काम हो गया। ओह, वर्मा साहब ! हाउ ग्रेटफ़ुल आई एम। अब इधर भी तो आइये...जी हाँ...आपका हक़ आपका इन्तज़ार कर रहा है...अरे नहीं, बस आइये...टू नाइट...यह बिलकुल ठीक रहेगा...ओह, दैट्स ऑलराइट...अच्छा, बाई-बाई !

(**टेलीफ़ोन रखकर**)

जयन्त : ये हमारे दोस्त थे। कुछ लोगों ने गवर्नमेंट से शिकायत की कि हमारी मिल के कपड़ों पर ऊँचे रेट्स छपे हैं। टैरिफ़ कमीशन इन्क्वायरी करने वाला था, पर इन्होंने मामला दबवा दिया।

किशोर : (**गहरा साँस लेकर**) बहुत अच्छा किया।

जयन्त : (**व्यंग न समझते हुए**) किशोर साहब, हमारे सब दोस्त बहुत अच्छा करते हैं। दोस्ती का पूरा हक़ निभाते हैं। और मैं

भी किसी को घाटे में नहीं रखता। अब देखिये, वर्मा साहब को एक बड़ी गाड़ी दे रहा हूँ। अ··· (दूसरा फंदा डालते हुए) किशोर साहब, आप एक गाड़ी क्यों न ले लें?

किशोर : (हँसकर) मैं!

जयन्त : (फंदा पूरा डालते हुए) हाँ, हमारे एक दोस्त हैं गिरीश। आपने नाम तो सुना होगा।

किशोर : (व्यंगपूर्वक) जी हाँ। बहुत तारीफ़ सुनी है।

जयन्त : उनके पास ५७ मॉडल की एक गाड़ी पड़ी है। उनके एक क्लाइंट ने प्रेज़ेंट की थी। आप ले लीजिये।

किशोर : (सोफे से उठकर) जयन्त साहब, ज़िंदगी की गाड़ी जिस तरह अब तक चली है, अगर उसी तरह चले जाए तो शुक्र मनाऊँगा।

जयन्त : (जल्दी से) लेकिन उसके लिए आपको कोई क़ीमत देनी न होगी।

किशोर : यह मुझे मालूम है। एक दिन बहुत-सा फ़र्नीचर, रेडियो, और क़ालीन भी मेरे पास बे-क़ीमत चल कर आये थे।

जयन्त : (बौखलाकर) जी! आपने क्या कहा?

किशोर : (अवसाद से भरकर) कुछ नहीं जयन्त साहब। मैं कभी-कभी पागलों जैसी बातें कर जाता हूँ। अब इजाज़त है?

(तभी गिरीश आता है।)

गिरीश : आ सकता हूँ?

जयन्त : अरे गिरीश आओ! बड़े वक़्त से आये; आप जा रहे थे।

गिरीश : (बनते हुए) आप?

जयन्त : इन्हें नहीं जानते?

गिरीश : (और बनकर) आपको (आँखें मूंदकर पहचानने की कोशिश का नाटक। फिर गर्दन हिलाकर) सॉरी जयन्त! आई एम नॉट लकी ऐनफ़।

जयन्त : आप किशोर साहब हैं। ताराजी के···?

गिरीश : (उछलकर) ओह किशोर साहब ! मैं किस तरह बताऊँ कि मैंने कितनी बार, कितनी-कितनी देर अपनी पार्टियों में आप का इन्तज़ार किया, मगर आपने हर बार नाउमीद किया।

किशोर : मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।

जयन्त : लेकिन आयेंगे अब भी नहीं—क्योंकि शाम को बहीखाते देखते हैं।

गिरीश : (इशारा पकड़कर) क्या ! दिन-भर दफ़्तर में सर-दर्दी के बाद आप रात को भी बहीखातों से उलझते हैं। किशोर साहब, मकड़ी के इन जालों से दूर ही रहें तो अच्छा—इनका तार नहीं मिलेगा।

किशोर : (तेज़ निगाहों से देखते हुए एक-एक शब्द जमाकर) तार तो मिल जाता है गिरीश साहब, लेकिन हाथ में रह नहीं पाता। लोग ईमान और उँगलियों पर एक दूसरी तरह का जाला डाल देते हैं।

गिरीश : (खिसियाकर) जाला !

किशोर : जी हाँ जाला—जो मकड़ी के जालें से भी ज़्यादा लेसदार होता है। (जलती हुई निगाहों से देखता है। एक अजीब तरह का सन्नाटा छा जाता है जिसमें गिरीश जैसे पकड़ा जाता है। सहसा जयन्त इस तनाव को तोड़ता है।)

जयन्त : अरे हम खड़े क्यों हैं ! बैठिये !

गिरीश : हाँ-हाँ, बैठिये !

किशोर : (बैठकर) आप नहीं बैठियेगा !

गिरीश : किशोर साहब, हमें बैठना कहाँ नसीब !

किशोर : क्यों ?

गिरीश : इसलिए कि ज़िन्दगी बड़ी ज़ालिम है। या तो हम उसे टँगड़ी मारकर गिरा दें या वो हमें टँगड़ी मारकर गिरा देगी। इसलिए

बड़ा चौकन्ना रहना पड़ता है।

किशोर : किसे ? आपको या ज़िंदगी को ?

गिरीश : (न समझकर) जी ?

किशोर : (मुस्कराते हुए) मैंने कहा, टँगड़ी मारने के इतने तजरबों के बाद तो खुद ज़िंदगी आपसे चौकन्नी रहने लगी होगी।

गिरीश : (खिसियाकर) बहुत खूब ! क्या खूबसूरत कमप्लीमेंट दिया है !

(तभी ड्राइवर आता है।)

ड्राइवर : साहब ! सेल्स टैक्स आफ़ीसर साहब के लिये गाड़ी ले जाऊँ ? - वक़्त हो गया।

जयन्त : (घड़ी देखकर) अरे हाँ; किशोर साहब, कुछ देर बैठेंगे ?

किशोर : अगर इजाज़त दें तो...।

जयन्त : अच्छा तो (उठ खड़ा होता है) देखो, साहब को छोड़ते जाना।

गिरीश : किशोर साहब, आज की इस खूबसूरत मुलाक़ात के लिए बे-हद शुक्रिया !

(किशोर खामोशी से सिर झुकाता है और चला जाता है। उसके जाते ही जयन्त क्रोध से गिरीश की तरफ़ देखता है। गिरीश नज़र नहीं मिला पाता।)

जयन्त : (क्रोध से) मुझे भी ज़लील कराया न तूने !

गिरीश : आई एम रीअली सॉरी जयन्त। मैं तो समझा था, तुम्हारा और रानी का लिहाज़ करके...।

जयन्त : लिहाज ? अरे मैंने अपने ऊपर डालकर पूछा कि मुझे भी नहीं बख्शोगे, तो ऐसे इनकार कर गया कि मैं देखता रह गया।

गिरीश : यह तो मैंने देखा। परों पर पानी नहीं टिकने देता था।

जयन्त : तू टिकने की बात करता है, वह गिरने नहीं देता।

गिरीश : बिल्कुल सही है। जाते हुए देखा, किस तनतने से गया है ?

जयन्त : जूता जो मारकर गया।

गिरीश : **(भयंकर संकल्प के स्वर में)** जयन्त, मेरा भी नाम नहीं, अगर यही जूता इसके मुँह पर न मारा। मैं यह केस कराऊँगा और इसी से कराऊँगा।

जयन्त : **(चौंककर)** लेकिन कैसे ?

गिरीश : **(कठोरता से)** इसकी बीवी के ज़रिये।

जयन्त : **(चौंककर)** तारा के ज़रिये ?

गिरीश : हाँ।

जयन्त : लेकिन गिरीश, तारा रानी की···

गिरीश : इतमीनान रखो। रानी या तुम पर कोई हर्फ़ न आयेगा। मैं नाख़ून ऐसे उतारूंगा कि उँगली को भी ऐतराज़ न होगा।

जयन्त : मगर फिर भी किस तरह ?

(तभी मैनेजर आता है।)

मैनेजर : सर !

जयन्त : क्या है ?

मैनेजर : सर, एक बहुत अर्जेण्ट काम।

गिरीश : जयन्त ! मैं अन्दर तुम्हारी स्टडी में चलता हूँ। तुम इनसे बातें करके आओ।

जयन्त : क्या अर्जेण्ट काम है जो इस वक़्त आये ?

मैनेजर : सर, वो नसीम··· 'नई दुनिया' का ऐडीटर···।

जयन्त : हाँ-हाँ ! क्या हुआ उसका ?

मैनेजर : सर, वो नहीं मानता।

जयन्त : नहीं मानता ? तुमने कितना आफ़र करवाया ?

मैनेजर : पाँच हज़ार, सर। पर वो कहने लगा, पैसे के हाथों बिकना था तो इन्कमटैक्स-इन्सपैक्टरी क्या बुरी थी।

जयन्त : **(झल्लाकर)** तो क्या वह भी इन्कमटैक्स-इन्सपैक्टर था ?

मैनेजर : यस सर ! पर कोई स्क्रू ढीला था कि नौकरी छोड़कर ऐडीटर बन गया ।

जयन्त : लेकिन उसका यह ढीला स्क्रू तो हमारे लिए मुसीबत बन जाएगा। अगर इसने अपने अखबार में लिख दिया कि हमने मिल के लिए स्टील के कोटे को ब्लैक-मार्केट में बेचा है तो स्कैण्डल खड़ा हो जाएगा ।

मैनेजर : और सर, हमारा प्रौसीक्यूशन होगा। उस बदमाश ऐकाउण्टैंट ने हमारे हाथ की रसीद उसको दे दी है।

जयन्त : तो अब किया क्या जाए ?

मैनेजर : सर, मैं उसे ले आया हूँ।

जयन्त : (झल्लाकर) यहाँ ले आए हो ?

मैनेजर : यस सर। वह बाहर बैठा है। आप उसे हैंडल कर लें।

जयन्त : (बिगड़कर) मैं ? क्या मेरा काम ऐसे टटपूंजियों की ठोड़ी में हाथ डालना रह गया है ! यह मेरा काम नहीं है।

मैनेजर : यह हम जानता है सर। हम आपसे रिश्वत देने की बात चलाने को नहीं कहता। आप बस एक काम कर दें।

जयन्त : क्या ?

मैनेजर : उससे कह दें आप मिल के मज़दूरों के लिए एक मैग़जीन निकालना चाहते हैं। वो ऐडीटर बन जाए ।

जयन्त : (सोचकर) ओह...तुम्हारा ख़याल है वो...

मैनेजर : वह पोइट यानी शायर है। मज़दूरों के नाम पर मान जाएगा। हम कुछ बात करके देख चुका है ।

जयन्त : तो बुलाओ उसे।

मैनेजर : अभी, सर।

(जाता है और नसीम को लेकर आता है।)

मैनेजर : सर, नसीम साहब...

जयन्त : ओह मिस्टर नसीम ! हाउ ड यू डू ?

नसीम : आप लोगों की नवाज़िश से ज़िन्दा हूँ।
जयन्त : तशरीफ़ रखिये। (आँख मारकर) मैनेजर साहब, कॉफ़ी।
मैनेजर : वैरी वैल सर! (जाता है।)
जयन्त : हमने मैनेजर साहब से सुना, आप बहुत अच्छी शायरी करते हैं।
नसीम : मैनेजर साहब से? फिर हरगिज़ यक़ीन न कीजियेगा!
जयन्त : क्यों?
नसीम : इसलिए कि मैं उर्दू में शेर कहता हूँ, और उर्दू शायद मैनेजर साहब की पूरी नस्ल ने नहीं पढ़ी।
जयन्त : (बौखलाकर सँभलते हुए) ओह...मगर इससे मेरे लिए फ़र्क नहीं पड़ता। मैं उर्दू जानता हूँ। मुझे शेर भी अच्छे लगते हैं। अक्सर आक्सफ़ोर्ड क्लब में सुनता हूँ।
नसीम : (व्यंगपूर्वक) ज़रूर सुनते होंगे।
जयन्त : आप वहाँ नहीं जाते?
नसीम : जी नहीं। शराब नहीं पीता, इसलिए उसके लोभ में ऐसी महफ़िलों में नहीं जाता, जहाँ लोग शायर को रंडी और क़व्वाल की जगह इस्तैमाल करते हैं।
जयन्त : (खिसियाहट दूर करते हुए) ओ स्प्लैंडिड। वैरी फ़ाइन! नसीम साहब, मुझे दरअसल आप ही जैसे नौजवान की ज़रूरत है।
नसीम : मेरे जैसे?
जयन्त : जी हाँ। मैं अपनी मिल के मज़दूरों के लिए एक मैगज़ीन निकालना चाहता हूँ। क्या आप मेरी मदद कर सकेंगे?
नसीम : (सख़्ती से) जी नहीं।
जयन्त : (हैरान होकर) नहीं?
नसीम : जी। मैं 'नई दुनिया' नहीं छोड़ सकता।
जयन्त : क्यों?

नसीम : वह मेरी ज़िन्दगी है।

जयन्त : (हलके से हँसकर) ज़िन्दगी ! कितना देती है यह ज़िन्दगी आपको ?

नसीम : दो सौ।

जयन्त : मैं पाँच सौ दूँगा।

नसीम : मुझे यक़ीन है।

जयन्त : फिर ?

नसीम : मगर मुझे अपनी आवाज़ अज़ीज़ है।

जयन्त : (हैरानी से) आवाज़ !

नसीम : हाँ जयन्त साहब, आप मुझे पाँच सौ देंगे, ज़्यादा भी दे देंगे, पर मेरी आवाज़…मेरी आज़ादी…मेरा क़लम मुझसे ले लेंगे।

जयन्त : मगर आप अब से अच्छी हालत में रह सकेंगे।

नसीम : (बड़े दर्द से) लेकिन वे जो बे-आवाज़ हैं, वे जो अपने सीनों में सितम के ख़ंजर सहते हैं पर चिल्लाने की सकत नहीं रखते, उनकी आवाज़ कौन बुलन्द करेगा ?

जयन्त : आपको उनसे मतलब ?

नसीम : (जज़्बात से काँपकर) जयन्त साहब ! मैं शायर हूँ, सूअर नहीं हूँ जो अपना पेट भरने के लिए जहाँ गंदगी देखता है, वहीं मुँह मारने लगता है। जिस दिन इंसान के बजाए ग़िज़ा खाकर गंदगी बनाने वाली मशीन बन जाऊँगा, मर जाऊँगा। **(उठकर जाने लगता है। तभी मैनेजर आता है। उसे जाते देखकर बोलता है।)**

मैनेजर : नसीम साहब ! साहब की बात तो सुनिये।

नसीम : मैनेजर साहब, उसके लिए आप काफ़ी हैं। अपनी तरह हर एक का ईमान न बिकवाइये।

(नसीम जाता है। जयन्त गुस्से से मैनेजर की तरफ़ देखता है।

मनेजर भीगी बिल्ली बनकर रह जाता है। जयन्त गुस्से में 'ब्लडीफूल-ईडिग्रट' कहता ग्रन्दर चला जाता है। मैनेजर भी शैचल उठाकर बाहर चला जाता है। बत्ती बुझ जाती है।)

तीसरा दृश्य

(वही कमरा। रोशनी होती है तो तारा ग्रौर रानी बाहर से हँसती हुई ग्रन्दर ग्राती हैं। रानी सोफ़े पर बैठकर पहले बनावटी थकान के ग्राधीन ग्राँखें बन्द करके गहरा साँस लेती है, फिर गर्दन झटककर ऐसे ग्राँखें खोलती है जैसे थकान दूर हो गई हो।)

रानी : कहो, मज़ा ग्राया ?

तारा : बहुत ! ग्राज तो ऐसा मज़ा ग्राया कि मन की सारी घुटन दूर हो गई।

रानी : ग्ररे, इसीलिए तो कहती थी कि घर की इस खोल से निकल ग्रौर दुनिया देख। जब से मेरे साथ जाने लगी है, लेटैस्ट डिज़ाइन के कपड़े पहनने लगी है, क्या स्मार्ट शक्ल निकल ग्राई है।

तारा : (सहसा गम्भीर होकर) मगर घर की शान्ति ख़त्म हो गई है। रोज़ झगड़े होते हैं।

रानी : (चमककर) किस बात पर ?

तारा : मेरे बाहर जाने पर···इस तरह स्मार्ट रहने पर···।

रानी : (भड़ककर) क्यों···किशोर साहब क्या इतने दक़ियानूसी ग्रादमी हैं ? उन्हें क्या ऐतराज़, ग्रगर तू ग्रपनी लाइफ़ बनाती है।

तारा : (साँस छोड़कर) वह इसे लाइफ़ नहीं समझते।

रानी : तो चौके-चूल्हे और झाड़ू-बुहारू को लाइफ़ समझते हैं? हमारे यहाँ के मर्दों को न जाने क्या हो गया है कि पढ़ी-लिखी औरतों को लाते हैं और पहले चौके और फिर ज़च्चाखानों में झोंक देते हैं।

(बैरा आता है।)

बैरा : आपके कमरे में पेण्ट हो गया सरकार। उसे पास कर दें।

रानी : चलो, आते हैं। (बैरा जाता है) तुझे याद है, उस दिन मिसेज़ चोपड़ा से मिलाया था?

तारा : हाँ-हाँ।

रानी : जब वो घर से बाहर जाने लगी थीं, तो चोपड़ा साहब भी इसी तरह तिलमिलाये थे। लेकिन कुछ दिन बाद जब वो चोपड़ा साहब से ज़्यादा कमाकर लाने लगीं तो आँखें खुलीं। अब दुगुनी इज़्ज़त करते हैं।

तारा : हाँ, यह बात तो है। जब औरत कमाकर नहीं लाती, तो उसकी कोई इज़्ज़त नहीं होती। बात-बात पर ताने सुनने पड़ते हैं, मन मारना पड़ता है, पैसे-पैसे के लिए आदमी का मुँह देखना पड़ता है।

रानी : और फिर भी क्या बनता है?

तारा : कुछ नहीं। न घर बनता है, न स्वास्थ्य रहता है।

रानी : तो फिर तेरी आँखें क्यों नहीं खुलतीं? जब जीजाजी इतना कम कमाते हैं तो तू कुछ क्यों नहीं करती? तू आज 'हाँ' कर, कल मैं तुझे काम दिलाती हूँ।

(गिरीश आता है।)

गिरीश : (तारा के नये रंग-रूप को देखकर बेहोश होने का नाटक करता है।) साग़र को मेरे हाथ से लेना कि चला मैं।

रानी : ओह! (उठकर) आज आपको क्या तकलीफ़ है?

गिरीश : तकलीफ़ ! रानी, हुस्न की बिजलियाँ चमकें और गिरीश को कुछ न हो ? रूप का सवेरा हो, और···

रानी : (हँसते हुए) तारा, इस क्लाउन को बहकने दो। अन्दर आओ, ज़रा पेण्ट पास कर आएँ।

गिरीश : (घुटनों के बल बैठकर हैट हाथ में लेते हुए) नहीं-नहीं; रानी ! अगर तुम्हें जाना है तो तुम जाओ, लेकिन इन्हें न ले जाओ; क्योंकि मेरे जीवन की दीवारों पर अभी पेण्ट नहीं हुआ। वे अभी तक पेण्ट को तरस रही हैं।

रानी : लेकिन लिपस्टिक के पेण्ट को। और वह यहाँ नहीं मिलेगा।
(हाथ पकड़कर तारा को अन्दर ले जाती है।)

गिरीश : (उठकर और हैट को धप से सिर पर रखकर) ओह गॉड—यह कमीशन नहीं बनेगा।
(तभी सेठ का मुनीम भागा-भागा आता है।)

मुनीम : ग्रीसजी, ग्रीसजी !

गिरीश : कौन मुनीम ! मुनीम के बच्चे, तू यहाँ फिर आया !

मुनीम : ग्रीसजी, मैं कभी ना आता, कभी ना आता, पर सेठजी का बंटाढार हो गया। उनके यहाँ पुलिस ने छापा मार दिया।

गिरीश : पुलिस ने ?

मुनीम : हाँ ग्रीसजी। इन्कमटैक्स वालों ने छापा डलवा के सारे बहीखाते पकड़वा लिए। पुलिस सारी दुकान के कागज़ बाँध कर ले गई।

गिरीश : मगर उसमें था क्या ?

मुनीम : अजी ग्रीसजी, उसीमें सब-कुछ था। असली बहीखाता तो उसी में था।

गिरीश : क्या ? ब्लैक की सारी आमदनी का हिसाब उसी में था ?

मुनीम : हाँ जी। जिस कापी में सेठजी ने अपना रोकड़ा जमाया हुआ था, वही चली गई। ग्रीसजी, सेठजी को बचा लो !

गिरीश : अब बचा लूँ ? असली खाता तुम दे दो और बचाने के लिए मैं मारा-मारा फिरूँ ! मैं कुछ नहीं कर सकता ।

मुनीम : (हाथ जोड़ते हुए) नहीं-नहीं ग्रीसजी । इब तक भी तुम्हीं करते आए हो, इब भी तुम्हीं करोगे । इब के बचा लो, फिर चाहे बीच मँझदार छोड़ देना ।

(गिरीश अंदर से आती किसी आवाज पर चौंक पड़ता है और मुनीम को बाहर धकेलता है ।)

गिरीश : अच्छा-अच्छा, अब जाओ । यहाँ तो बेड़ा ग़र्क मत करो ।

मुनीम : (जाते-जाते पलटकर) फिर कुछ करोगे ?

गिरीश : हाँ-हाँ, तुम्हारे खोदे को भरूँगा । मगर इस घड़ी दफ़ा हो जाओ ।

(उसे लगभग उठाकर बाहर फेंक देता है ।)

गिरीश : ओह ! यह कम्बख़्त उस सेठ को छोड़ेगा नहीं । अगर कापी उसके हाथ लग गई तो सेठ का बेड़ा और मेरा कमीशन—सब ग़र्क हो जाएँगे ।

(इधर-उधर घूमता है । तभी दरवाज़े में रानी और तारा नजर आती हैं ।)

रानी : तो कल आना··· !

गिरीश : (बात काटकर) रानी !

रानी : (झल्लाकर) गिरीश, देखो भई, मैं बेहद थक गई हूँ । इस वक़्त मुझे बोर न करो ।

गिरीश : (पूरी गंभीरता से) रानी, मुझे सिर्फ़ एक मिनट चाहिए । फिर मैं चला जाऊँगा ।

रानी : (आगे बढ़ते हुए) नहीं । इस वक़्त मैं कुछ नहीं सुन सकती··· आओ तारा !

गिरीश : रानी, मुझे एक रिप्रिज़ैण्टेटिव चाहिए ।

रानी : (चौंककर) क्या ?

गिरीश : (तारा की तरफ देखकर) मुझे एक लेडी रिप्रिज़ैण्टेटिव की ज़रूरत है।

रानी : लेडी रिप्रिज़ैण्टेटिव की ! (तारा की ओर देखती है।)

गिरीश : हाँ।

रानी : क्या दोगे ?

गिरीश : पाँच सौ।

रानी : और पसन्द ?

गिरीश : तुम्हारी।

रानी : पक्का ?

गिरीश : (हाथ बढ़ाकर) वर्ड आफ़ आनर !

रानी : तो तारा को रख लो !

तारा : (चौंककर) रानी !

गिरीश : (बड़ी तेज़ी से) मुझे मंजूर है।

तारा : (बौखलाकर) नहीं-नहीं गिरीश साहब ! रानी, मैं नौकरी नहीं कर सकती।

रानी : क्यों नहीं कर सकती ? घर में पड़े-पड़े तो यह हाल बना लिया।

तारा : लेकिन फिर भी मैं नौकरी नहीं कर सकती। मुझे कुछ नहीं आता···मैं कुछ नहीं जानती।

गिरीश : यह देखना मेरा काम है और मैंने देख लिया।

रानी : बस, फिर तुझे क्या फ़िक्र ! तू नौकरी करेगी ?

तारा : नहीं रानी—मैं नहीं कर सकती। गिरीश साहब !

गिरीश : (झुककर) रानी के फ़ैसले के खिलाफ़ अपील मेरे यहाँ नहीं होती।

रानी : (तारा को बाहर ले जाते हुए) अब तू घर जा। फ़ैसला हो चुका। (उसे बाहर ले जाती है। गिरीश दरवाज़े तक उनके पीछे जाता है। अन्दर से जयन्त निकलता है।)

जयन्त : अबे, यह कैसा शोर था ?

गिरीश : यह शोर नहीं था, फ़ैसला था ।

जयन्त : कैसा फ़ैसला ? किसका फ़ैसला ?

गिरीश : रानी का फ़ैसला ! तारा अब मेरी सर्विस में है ।

जयन्त : गिरीश !

गिरीश : (नफ़रत के साथ) हाँ । गाय ने सींग बदल लिया है । अब भूचाल आयेगा—भूचाल—हो हो हो ! (विलियन की तरह हँसता है ।)

(रोशनियाँ बुझ जाती हैं ।)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(किशोर का कमरा। तारा शृंगार-मेज़ पर बैठी मेक-अप कर रही है। किशोर बाहर से आता है। पीछे-पीछे अर्दली है। उसके कन्धे पर लाल कपड़े में बँधा बहीखाता है। किशोर किताबों के रैक पर अपना शैचल रखता है।)

किशोर : तारा !

(तारा मुड़ती है। अर्दली सलाम करता है।)

तारा : (उसके सलाम के जवाब में गर्दन हिला कर।) आप आ गए !

किशोर : हाँ। देखो, ये बहीखाते अन्दर रखवा लो।

तारा : अन्दर ?

किशोर : हाँ, ये पुलिस ने ज़ब्त किये हैं। इन्हें सँभाल कर रखना है।

तारा : अच्छा। (अर्दली से) अन्दर ले आओ।

किशोर : और देखो, मेरा बिस्तर भी उठवा देना करीम खाँ को। साहब की गाड़ी में रख देगा।

तारा : बहुत अच्छा।

(तारा और अर्दली अन्दर जाते हैं। किशोर सोफ़े पर बैठता ही है कि नसीम आता है।)

नसीम : आदाबअर्ज़ हुज़ूर !

किशोर : अरे नसीम ! (उठकर गले लगाते हुए) मेरे दोस्त, (अलग करके) तू तो ईद का चाँद हो गया।

नसीम : (हँसते हुए) चलो, इसी बहाने लोगों की नज़र उठ जाती है, वरना कौन पूछता है।

किशोर : तुमको ? अबे, जितनी पूछ तुम शायरों की होती है, मुझे सब मालूम है।

नसीम : क्या मालूम है ?

किशोर : मुझी से पूछते हो। बेटे, वो जो आये-दिन इश्क़िया खत आते हैं—कभी ज़ोहरा और ज़ुबेदा के, कभी निकहत और नज़हत के, कभी तनवीर और तसनीम के।

नसीम : तुझे भी चाहिएं ?

किशोर : मुझे ? दोस्त, अपने नसीब में जिस तरह के खत लिखे हैं, अभी उनका एक गट्ठर उठवाकर लाया हूँ।

नसीम : (हँसकर) बहीखातों का ?

किशोर : और क्या ! सच नसीम, तू खूब छूट गया।

(अर्दली दाखिल होता है)

अर्दली : साहब (नसीम को देखकर) आदाबअर्ज़ हुज़ूर !

नसीम : आदाबअर्ज़—कैसे हो करीम मियाँ !

अर्दली : आप लोगों के करम पर पल रहा हूँ सरकार !

किशोर : मुझसे कुछ पूछने आये थे ?

अर्दली : जी, बेगमसाहिबा दरयाफ़्त कर रही हैं कि कम्बल काफ़ी होगा या रज़ाई दरकार होगी।

किशोर : रज़ाई की कोई ज़रूरत नहीं। जैसा बिस्तर लगा हुआ है, लपेट कर ले जाओ।

अर्दली : बहुत बेहतर जनाब ! (नसीम से) इजाज़त है ?

नसीम : ज़रूर-ज़रूर।

(अर्दली जाता है)

नसीम : क्या दौरे पर जा रहे हो ?

किशोर : हाँ यार, असिस्टैंट कमिश्नर साहब के साथ जाना पड़ रहा है!

नसीम : कब आओगे ?
किशोर : दस-बारह दिन में।
नसीम : बस, तो दोस्त लौटकर आओ। तुम्हारा दिल खुश कर दूंगा।
किशोर : (चौंककर) क्यों ! क्या बात है ?
नसीम : जिस मक़सद के लिए नौकरी छोड़कर ऐडीटरी की थी, उसकी पहली क़िस्त अदा करूँगा।
किशोर : वह कैसे ?
नसीम : एक चेहरे से नक़ाब उठाकर।
किशोर : (**समझने की कोशिश करते हुए**) नक़ाब उठाकर ?
नसीम : हाँ किशोर ! हमारी ज़िन्दगी की तंगी और तबाही के ज़िम्मेदार कौन हैं, हमें अक्सर पता नहीं चलता। हम जिन चेहरों को बेहद खूबसूरत, बेहद क़ाबिले-इज़्ज़त समझते हैं, वही हमारे सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। मैं एक ऐसे ही चेहरे की नक़ाब उलट दूंगा।
किशोर : मगर किसकी ?
नसीम : मशहूर इण्डस्ट्रियलिस्ट जयन्त की।

(**अर्दली आता है—बिस्तर उठाये**)

अर्दली : साहब !
किशोर : (**मुड़कर**) देखो करीम खाँ, (**किताबों के रैक पर से अपना शैचल उठाकर**) यह भी ले जाओ। और साहब से कह देना कि इधर आने की तकलीफ़ न करें। मैं खुद पहुँच जाऊँगा।
अर्दली : बहुत बेहतर ! (**नसीम से**) आदाबअर्ज़ हुज़ूर !
नसीम : आदाबअर्ज़ करीम मियाँ।

(**अर्दली जाता है।**)

किशोर : (**उत्सुकता से**) यार, यह जयन्त की क्या बात है ?
नसीम : मिल के लिए जो स्टील का कोटा अलाट हुआ था, उसे ब्लैक में बेचकर पचास हज़ार रुपये हड़प कर गया।

किशोर : (**व्यंगपूर्वक मुस्कराकर**) यानी लोगों के लिए कपड़ा बनाने के नाम पर उनकी खाल खींचने से तसल्ली नहीं हुई, स्टील का ब्लैक भी शुरू कर दिया।

नसीम : वो तो इंसानों का भी ब्लैक करता है। पहले मैनेजर से और फिर खुद बुलाकर मुझसे मेरी ब्लैकमार्किट-प्राइस पूछी।

किशोर : क्या आफ़र किया ? मुझे तो कार दे रहा था।

नसीम : (**हैरानी से**) तुझे ? ये किस मामले में !

किशोर : यह नहीं मालूम। लेकिन एक दिन बुलाया। पहले कॉफी पिलायी, फिर मेरी बहुत सी दुखती रगों पर हाथ रखना चाहा। फिर दोस्ती और लिहाज़ का वास्ता दिया।

नसीम : दोस्ती और लिहाज़ का ? तुम्हारी उससे रस्म-ओ-राह है ?

किशोर : जयन्त की बीवी रानी, तारा की पुरानी सहेली है।

नसीम : (**चौंककर**) किशोर !

किशोर : मगर चौंको नहीं दोस्त, क्योंकि हमारी दोस्ती इन्सानों से नहीं है, आदर्शों से है।

नसीम : (**झिझकते हुए**) लेकिन बाद में भाभीजान ने कुछ कहा तो···

किशोर : (**बहुत गंभीर, बहुत उदास होकर**) नसीम ! तुम्हारी भाभी-जान ने मुझ से प्यार किया था, मेरे आदर्शों से नहीं। इसीलिए उनके दोस्तों और हमारे दोस्तों में बहुत फर्क़ है।

नसीम : लेकिन यहाँ तो टकराव का मामला आन पड़ा है।

किशोर : तुम बे-झिझक टक्कर ले जाओ नसीम। उन चेहरों की बनावटी खूबसूरती मिटा डालो, जिनके रंग-रूप की दमक ने तुम्हारी भाभी की निगाहों को चकाचौंध कर दिया है। शायद··· शायद इसीसे मेरा रास्ता आसान हो जाए।

(**तभी नसीम का चपरासी गंगाराम दौड़ा-दौड़ा आता है।**)

गंगाराम : नसीम साहब ! नसीम साहब !

नसीम : क्या हुआ गंगाराम ?

गंगाराम : साहब, आग···आग ! दफ़्तर में आग लग गई !

नसीम : आग ! कैसे ? कब ?

गंगाराम : साहब, किसी ने लगायी है। पैट्रोल की बू उठ रही है।

किशोर : यह क्या ?

नसीम : (चेहरा कठोर हो जाता है) ये आग उसी ने लगवायी है।

किशोर : किसने ?

नसीम : जयन्त ने, ताकि उसके खिलाफ़ जो कागज़ मेरे पास हैं, जल जाएँ।

किशोर : वो कहाँ हैं ?

नसीम : वहीं दफ़्तर में। उसने कागज़ों को जला दिया। लेकिन मैं तो जिंदा हूँ। मैं उसे नहीं बख्शूंगा।

(गंगाराम के साथ लौट जाता है। तारा आती है।)

तारा : यह कैसा शोर था ? कौन आया था।

किशोर : (गंभीर स्वर में) नसीम।

तारा : कहाँ गये ?

किशोर : (साँस छोड़कर) आग से खेलने।

तारा : (न समझकर) आग से ! कैसी आग ?

किशोर : जो सब-कुछ जला देती है, लेकिन शुक्र है, इन्सान को नहीं जला पाती।

तारा : आप कैसी बातें कर रहे हैं !

किशोर : जो तुम नहीं समझोगी। इसलिए इसे छोड़ो और ये लो।

(जेब से निकालकर एक लिफ़ाफ़ा देता है।)

तारा : यह क्या है ?

किशोर : घर के लिए खत। इसमें ढाई सौ रुपये का चैक रखकर पोस्ट कर देना।

तारा : ढाई सौ रुपये का ?

किशोर : हाँ-हाँ, पिताजी ने अपना जो टाइपराइटर भेजा था, वो

इतने ही को तो बिका था।

तारा : लेकिन क्या अभी भेजने की ज़रूरत है?

किशोर : कमाल करती हो! उन्हें आँख का आपरेशन कराना है—हम पर बोझा न पड़े, इसीलिए तो टाइपराइटर बेचा।

तारा : **(पलटकर जाते हुए)** लेकिन बैंक में इतने पैसे नहीं हैं।

किशोर : **(चौंककर)** क्या! बैंक के आठ सौ रुपये में से कुछ नहीं है?

तारा : सौ-सवा सौ होंगे।

किशोर : बाक़ी क्या हुए?

तारा : ख़र्च हो गए।

किशोर : **(ज़ोर से)** तारा!

तारा : **(उतने ही ज़ोर से)** चिल्लाते क्यों हो?

किशोर : तुमने दो महीनों में आठ सौ रुपये ख़र्च कर डाले! मेरे सरमाये के साथ मेरे बाप की आँखों के इलाज के रुपये भी उड़ा डाले—और मैं खामोश रहूँ? तुमने उन रुपयों का क्या किया? **(तभी दरवाज़े पर दस्तक़ होती है। मुड़कर दरवाज़े की तरफ़ जाता है। एक स्मार्ट सा सेल्समैन दाखिल होता है।)**

सेल्समैन : आफ़्टर-नून सर! यह मादाम का कोट है। **(तारा को देखकर)** मादाम, आफ़्टर-नून। आपका कोट **(झुककर पेश करता है।)** मादाम जयन्त ने जो डिफ़ैक्ट्स बताये थे, वो निकाल दिये गए हैं।

तारा : **(घबराकर लेते हुए)** ओह ठीक है। शुक्रिया!

सेल्समैन : मादाम ट्राई करके देख लें!

तारा : नहीं-नहीं—बिलकुल ठीक है। अब तुम जाओ।

सेल्समैन : **(गर्दन झुकाकर)** एज़ यू प्लीज़। थैंक यू मादाम! थैंक यू सर!

किशोर : थैंक यू।

(सेल्समैन चला जाता है।)

किशोर : तो रुपये इस तरह ख़र्च हुए हैं।

तारा : (सामने डटकर) हाँ ! मुझे कोट चाहिए था। उन लोगों के साथ मैं तीस रुपये के शालों ग्रौर पचास-साठ के कोटों में नहीं घूम सकती।

किशोर : (सख़्ती से) तुम ग्रौर क्या-क्या नहीं कर सकतीं ?

तारा : मैं दस-दस बारह-बारह की साड़ियाँ नहीं पहन सकती। बे-मेल ब्लाउज़ नहीं पहन सकती। चार-चार रुपये की चप्पलें नहीं पहन सकती। मैं ग्रपनी हल्की नहीं करा सकती।

किशोर : चाहे मेरा बाप ग्रन्धा हो जाए···मेरा घर बिक जाए। मेरा ईमान तुम्हारी नीयत की तरह ग्रमीरों की दहलीज़ का कुत्ता बन जाए···!

(स्वर मार्मिक हो उठता है। तभी दरवाजे पर खटखट होती है।)

किशोर : कौन है ?

लड़का : साहब मैं।

(बहुत-से काग़ज़ के थैले लाकर देता है) मेमसाहब की साड़ियाँ ड्राईक्लीन होकर ग्राई हैं।

किशोर : रख दो उधर।

(रखता है)

किशोर : ग्रब जाग्रो।

लड़का : जी साहब, मगर बिल। पिछले क्वार्टर का भी है।

किशोर : **(तारा की ग्रोर देखकर)** कितने का है ?

लड़का : पैंतालीस रुपये का।

किशोर : क्या ? **(गुस्से से बिल देखकर)** यह ठीक है ?

लड़का : हाँ।

किशोर : **(जेब के रुपये निकालकर)** ले जाग्रो।

लड़का : **(गिनकर)** ये पचास हैं।

किशोर : ले जाओ। ये पाँच रुपये तुम्हारी बख्शीश के हैं। जाओ।
(**सलाम करके भाग जाता है। तारा साड़ियां उठाकर अन्दर जाने लगती है।**)

किशोर : ठहरो !

तारा : क्या है ?

किशोर : मुझे सिर्फ़ एक बात और बताओ ! बैंक के सौ सवा सौ ख़त्म होने के बाद कैसे चलेगा ?

तारा : मुझे कुछ करना होगा।

किशोर : तुम्हें ?

तारा : हाँ—खाली तनख़ाह में गुज़ारा नहीं होता।

किशोर : (**चिल्लाकर**) तनख़ाह के आगे यह खाली मत लगाओ।

तारा : लगाना होगा। तनख़ाह में गुज़ारा नहीं होता।

किशोर : पहले कैसे होता था ?

तारा : मैं बावरचन और कहारी की तरह जो रहती थी।

किशोर : (**चोट-सी खाकर**) तारा !

तारा : हाँ ! पहले मैं हर बात पर अपना मन मारती थी। अपनी इच्छाओं को दबाती थी। इस अँधेरी कोठरी में.........

किशोर : (**भावावेश में**) तारा, आज यह कमरा तुम्हारे लिए अँधेरी कोठरी हो गया ?

तारा : हाँ। लेकिन अब मुझसे ऐसे नहीं रहा जाएगा। मैं कुछ करूँगी।

किशोर : (**घृणा से**) तुम कुछ नहीं करोगी—सिर्फ़ होठों पर सुर्खी लगाकर और छः गिरह का ब्लाउज़ पहनकर झीनी-झीनी साड़ी में अपना बदन दिखाती फिरोगी।

तारा : (**चिल्लाकर**) किशोर !

किशोर : ओह ! अब तुम्हारे गले के ग्लेंड्स इतने काम करने लगे ? तुम बहुत ग़लत लोगों में जा रही हो।

तारा : लेकिन वे ग़लत लोग मेरा तुम से ज़्यादा मान करते हैं। रानी

मुझे अपने बराबर जगह देती है। उसने मुझे सैकड़ों रुपये के प्रेज़ेंट्स दिये हैं।

किशोर : (ज़ोर से) वे प्रेज़ेंट्स नहीं हैं।

तारा : तो क्या हैं ?

किशोर : वे उतरनें और बख़शीशें हैं जो बड़े लोग अपने नौकरों और अपनी आयाओं को देते हैं ताकि वे उनके साथ जाने लायक़ हो जाएँ।

तारा : (भड़ककर) तुम मुझे आया से मिलाते हो ? तुमने मुझे समझा क्या है ? तुम समझते हो मैं उसके प्रेज़ेंट्स लेकर बैठ जाऊँगी ! मैं भी उसे प्रेज़ेंट्स दूँगी और इतने ही क़ीमती ! (अन्दर जाने लगती है)

किशोर : कहाँ से ?

तारा : (पलटकर) कहाँ से ?......कहाँ से......ओह, तुम रुपये न देने की बात करते हो। तो सुन लो। मुझे तुम्हारे रुपयों की परवा नहीं। मैं नौकरी करूँगी। कुछ भी न होगा तो अपने ज़ेवर बेचकर......।

किशोर : (आहत होकर) तुम ज़ेवर बेचोगी ! फिर ये तन के कपड़े बेचोगी ! फिर यह घर-बार और मेरी इज़्ज़त बेचोगी ! तुम्हारी ग़ैरत को हुआ क्या है ?

तारा : (चीख़कर) किशोर, खामोश हो जाओ, वरना......

किशोर : वरना क्या ? तुम मुझे छोड़कर चली जाओगी। लेकिन अब भी तुम यहाँ कहाँ हो ? तुम्हारे तन पर दूसरों के कपड़े हैं। तुम्हारी आँखों में दूसरों के नक़्शे हैं और तुम्हारी आत्मा—तुम्हारी आत्मा भटकती फिर रही है रानी के बँगलों में, जयन्त की कारों में, गिरीश की पार्टियों में।

तारा : (क्रोध पर क़ाबू पाने की कोशिश में सिर को हाथों में थामते हुए) तुम चुप होगे कि नहीं ?

किशोर : तुमने मुझे बोलने के क़ाबिल कहाँ रखा है। मैं दफ़ा भी हुआ जाता हूँ।

(किशोर चला जाता है। तारा गुस्से से साड़ियाँ उठाकर अन्दर चली जाती है। कुछ क्षण बाद गिरीश दाख़िल होता है। पहले तो वह इधर-उधर देखता है, फिर अन्दर के दरवाज़े पर दस्तक देकर तारा को आवाज़ देता है।)

गिरीश : तारादेवी !

तारा : (अन्दर से) कौन ?

गिरीश : फ्रांसीसी कहानी का राजकुमार।

तारा : (अन्दर आकर) ओह, गिरीशजी नमस्ते !

गिरीश : नमस्ते (जेब से चाबी निकालकर एक हाथ पर रखकर और उसके नीचे दूसरा हाथ लगाकर) ये आपकी सेवा में अर्पित है।

तारा : (हँसते हुए) क्या है ?

गिरीश : मेरे दफ़्तर की चाबी।

तारा : (वैसे ही हँसते हुए) मैं क्या करूँ ?

गिरीश : उठाकर बाहर फेंक दीजिये कि जो कल से बन्द है, हमेशा के लिए बन्द हो जाए।

तारा : आप क्या कह रहे हैं ?

गिरीश : जो ठीक है। मैंने कल से दफ़्तर नहीं खोला।

तारा : लेकिन क्यों ?

गिरीश : ये आप पूछती हैं तारादेवी ? गिरीश का दफ़्तर या तो तारा-देवी खोलेंगी या कोई नहीं खोलेगा।

तारा : (आँखों में चमक पैदा हो जाती है) ओह ! उस दिन की बात पकड़ बठे हैं आप; बैठिये, मैं अभी आयी। (हँसती हुई अन्दर जाती है और दो प्लेटों में फल लेकर आती है। गिरीश किताबों की अलमारी देखने लगता है।)

तारा : अरे, आप बैठे नहीं। आइये-आइये, गुस्सा हल्का कीजिये।

गिरीश : नहीं तारादेवी। मैं न कुछ खाऊँगा, न पीऊँगा, न बैठूँगा।

तारा : हड़ताल कीजियेगा ?

गिरीश : हड़ताल वो करता है जिसे मालूम हो कि किसी के मन में उसके लिए दर्द है। मुझे तो आप भी इंसान नहीं समझतीं।

तारा : **(सहसा गंभीर हो जाती है)** गिरीशजी, आप भी ऐसी बातें करने आये हैं ? मैं जाऊँ ?

गिरीश : **(तुरन्त लहजा बदलकर)** अरर—आप नाराज़ हो गईं !

तारा : तो क्या करूँ। आप भी मुझसे गिला रखते हैं।

गिरीश : तो आप आयीं क्यों नहीं ? आपको कल से मेरे दफ़्तर आना था।

तारा : **(उदास सी होकर)** आप बैठकर कुछ खाइये तो। मैं बताती हूँ।

(तारा सन्तरा छीलकर देती है)

गिरीश : शुक्रिया ! **(फाँक खाते हुए)** अब बताइये !

तारा : बात यह है कि किशोरजी पसन्द नहीं करते।

गिरीश : क्या ? मुझे ?

तारा : **(जल्दी से)** नहीं-नहीं। मेरा मतलब······कमीशन लेने-देने और पैसे देकर काम कराने को।

गिरीश : **(उठकर)** ओह ! यह मैं जानता हूँ। यह उजड़ा कमरा, यह पुराना फ़र्नीचर, ये खूँटियों पर ख़ाकी पतलूनें और सूती धोतियाँ—सब एक आवाज़ से कह रही हैं कि इस घर के मालिक को अवतार और पैग़म्बर बनने का शौक़ समाया हुआ है।

तारा : पर मैं क्या कर सकती हूँ ?

गिरीश : लेकिन मैं पूछता हूँ आखिर उन्हें नेकी और ईमानदारी की यह बीमारी लगी कहाँ से ?

तारा : (गहरी साँस लेकर छिलके कोने में रखी टोकरी में फेंकने जाते हुए) ये उनके आदर्श हैं।

गिरीश : ग़लत तारादेवी। ज़िन्दगी का एक ही आदर्श है—"जियो और जीने दो—लिव एण्ड लेट लिव।" यह भी क्या कि न ख़ुद जीते हो, न दूसरे को जीने देते हो। अरे, घाट पर बैठे हो तो अपना किराया लो। लोगों की किश्तियाँ क्यों रोकते हो ?

तारा : (बिना किसी भाव के) वो कहते हैं, जब तक इन बुराइयों को दूर न किया गया...

गिरीश : (बात काटकर) यानी वे समझते हैं रिश्वत न लेकर और पूरा इन्कमटैक्स लगाकर वे लोगों को बे-ईमानी और ब्लैक-मार्किट से रोक सकेंगे ? तारादेवी, दुनिया का जनेऊ बदलने की कोशिश में इन्सान कुछ अपना ही खोता है।

तारा : (भावशून्य स्वर में) लेकिन आत्मा की शान्ति तो मिल जाती है।

गिरीश : तो आप भी आत्मा की इस अफ़ीम की गोली को निगल गई हैं ? तारादेवी, अगर आत्मा वह छुई-मुई होती जो क़ानून तोड़ने और ग़लत काम करने से मर जाती है तो समझिये कि मेरी आत्मा कभी की मर चुकी। पर क्या मैं मुर्दा नज़र आता हूँ ? मेरे चेहरे पर किशोर साहब के चेहरे से कम ज़िन्दगी है ?

तारा : (जल्दी से) नहीं-नहीं; मैं तो ख़ुद कहती हूँ, पर वे नहीं मानते !

(बाहर से दूध वाले की आवाज आती है)

दूधवाला : बीबीजी, दूध ले जाओ।

तारा : अच्छा (गिरीश से) मैं अभी आयी।

(तारा जाती है। भगोने में दूध लेकर अन्दर जाती है। लौटकर लाड़ी से हाथ पोंछती हुई आती है।)

तारा : आप चाय पियेंगे या कॉफ़ी ?

गिरीश : कुछ नहीं ।

तारा : अभी तक नाराज़ हैं ?

गिरीश : हाँ । मैं पूछता हूँ, आप दूध क्यों लायें ? चाय क्यों बनायें ? खाना क्यों पकायें ? रानी की तरह आपके बैरे, बटलर, खानसामा क्यों न हों ?

तारा : **(गहरी साँस छोड़कर)** गिरीशजी, अपने-अपने नसीब की बात है···

गिरीश : नसीब की नहीं, नेकी और ईमानदारी के ख़ब्त की । जानती हैं, मेरे पिता को भी यही खब्त था । ईमानदारी के चक्कर में उम्र-भर भूखे मरते रहे । जब मुझे होश आया, मैंने देखा हमारा सब कुछ चला गया, पर दुनिया वैसी की वैसी ही है । बस, ईमानदारी को उनकी हड्डियों के साथ गंगा में बहाकर यहाँ चला आया । तब से ऐसे पनपा हूँ जैसे बढ़े हुए टानसिल्स का आपरेशन करा लिया हो ।

तारा : मैं समझती हूँ । सब कुछ समझती हूँ । मेरे पिताजी ने इतनी सारी दौलत, तनखाह से तो जमा नहीं की । लेकिन मैं क्या करूँ···वे नहीं मानते ।

गिरीश : लेकिन मैं आपसे रिश्वत लेने को तो नहीं कह रहा—सर्विस आफ़र कर रहा हूँ । **(बड़े शैतानी ढंग से)** अगर मुझे उनके ईमान का इतना खयाल न होता तो आपके हाथ पर अभी पाँच हज़ार रख देता ।

तारा : **(चौंककर)** पाँच हज़ार ?

गिरीश : हाँ—और एक कापी के ।

तारा : **(न समझकर)** कापी के ?

गिरीश : हाँ । किशोर साहब ने पुलिस के ज़रिये मेरे एक क्लाइंट का खाता ज़ब्त कराया है। उसके साथ उसकी एक कापी चली

आई है जिसमें उसके ब्लैक की आमदनी का सारा हिसाब है।
उस कापी के लौटाने के बदले वह पाँच हज़ार दे सकता है।

तारा : क्या ? लाल से कपड़े में बँधा हुआ था बहीखाता ?

गिरीश : बिलकुल।

तारा : (कमज़ोर-सी आवाज़ में) उसे तो अभी अन्दर रखवा कर गये हैं।

गिरीश : ज़रूर गये होंगे। उसी बहीखाते की एक ऐसी कापी के जिसकी किशोर साहब को खबर तक नहीं, पाँच हज़ार मिल सकते थे।

तारा : लेकिन अगर उन्हें मिल गई तो वे नहीं लौटायेंगे। (कुछ ठहरकर अजीब से लहजे में) आपके दोस्त हों···या आपको कुछ मिलता हो, तो·· आप देख लीजिये—अन्दर रखे हैं।

गिरीश : तारादेवी, कोई बिज़नैस-मैन मेरा दोस्त नहीं और कमीशन लिये या दिये बिना मैं किसी से बात नहीं करता। मैं कापी देखे लेता हूँ—आप पाँच हज़ार ले लीजिये।

तारा : (काँपकर) मैं ?···मैं ?

गिरीश : (चालाकी से) तो रहने दीजिये। हमारा आपका सौदा नहीं होगा।

तारा : (अजीब से, परोक्ष स्वर में) लेकिन मैं पाँच हज़ार का क्या करूँगी और उनसे छिपाकर।

गिरीश : (उसकी आँखों में आँखें गाड़कर) तारादेवी, पाँच हज़ार का तो सच्चे मोतियों का मामूली-सा हार आता है, जिसे नक़ली मोतियों का बताकर बड़ी आसानी से हर वक़्त पहना जा सकता है।

तारा : (सहसा आँखों में लोभ की चमक जाग उठती है) आप बड़े ही चालाक हैं !

गिरीश : क्या करूँ तारादेवी, यह दुनिया बड़ी ज़ालिम है। यहाँ छोटा-सा काँटा निकालने के लिए सुई और नश्तर की ज़रूरत होती है।

तारा : (जल्दी से घबराकर) अच्छा-अच्छा। मैं यहाँ हूँ। आप जल्दी से जाकर कापी देख लाइये—अन्दर बड़ी मेज़ पर है।

गिरीश : जो हुक्म।

(तारा दरवाज़े पर जा खड़ी होती है और बड़ी घबराहट में कभी अन्दर कभी बाहर देखती है। तभी गिरीश अन्दर से एक कापी लिए आता है)

गिरीश : पार्टनर ! कापी मिल गई।

तारा : (माथे का पसीना पोंछते हुए) तो इसे छिपा लीजिये और ले जाइये (सहसा भयभीत होकर) लेकिन इसके ले जाने से उनको तो कोई ख़तरा नहीं होगा ?

गिरीश : ख़तरा इस कापी के यहाँ रहने से था और इस बात का कि ब्लैक की आमदनी का हिसाब लगाते-लगाते किशोर साहब को चक्कर न आ जाता।

तारा : अच्छा अब आप चले जाइये। वो आ न जाएँ।

गिरीश : और आपके रुपये ?

तारा : वो आप अपने पास रखिये। मैं फिर ले लूँगी।

गिरीश : आल राइट—बाई-बाई !

तारा : बाई-बाई—(पसीना पोंछती है। बत्ती गुल हो जाती है)

दूसरा दृश्य

(वही कमरा। शोफ़र और बैरा दाख़िल होते हैं। शोफ़र के हाथ में पिडास्टल लैम्प है। उनके पीछे-पीछे मज़दूर सोफ़ा और दो क़ालीन लिए आते हैं।)

शोफ़र : इधर लाओ, इधर—बस, वहीं-वहीं—पहले इसे (पुराने सोफ़े

की तरफ इशारा करके) बाहर ले जाओ और ठेले पर रखवा देना।

(मजदूर पुराना सोफ़ा लेकर जाते हैं)

बैरा : यह क्या फर्नीचर वाले के जाएगा ?

शोफ़र : हाँ। मेम साहब ने इसे कबाड़ी को दे दिया। लेकिन तुम इसे (क़ालीन की तरफ़ इशारा करके) फैलाओ। वे आती होंगी।
(बैरा और शोफर क़ालीन बिछाते हैं कि मजदूर श्रृंगार मेज लाते हैं)

शोफ़र : इसे वहीं रखो। (बैरा से) तुम पुरानी मेज़ अन्दर रखवा दो।

बैरा : अरे तुम इसे उठवाओ। (मजदूर मेज उठाते हैं)

शोफ़र : (बाकी दो मजदूरों से) अरे तुम इतने सोफ़ा लगवाओ।
(वे सोफ़ा लगवाते हैं कि बैरा अन्दर से आता है। वह नई श्रृंगार मेज लगवाता है)

शोफ़र : (जब श्रृंगार मेज लग जाती है) देखो बैरा, ये लोग वार्ड रोब लाएँगे। तुम रेडियो उतार लाओ।

बैरा : चलो, चलो, जल्दी करो।
(बैरा मजदूरों को लेकर जाता है। तभी रानी और तारा आती हैं। तारा ने फ़र का कोट और काला चश्मा पहन रखा है। रानी भी बढ़िया कोट पहने है। शोफ़र उन्हें देखते ही अटैंशन हो जाता है)

रानी : सब सामान ठीक आ गया ?

शोफ़र : जी। वार्ड रोब आना रह गया है।

तारा : और रेडियो ?

शोफ़र : वह बैरा ख़ुद लाने गया है।

रानी : (तारा से) यहाँ सामने मैंटल-पीस पर रखने के लिए डोलस चाहियें। कल एम्पोरियम से लाएँगे।

तारा : (गर्दन हिलाकर हाँ करती है)

(तभी मज़दूर वार्ड रोब लाते हैं। बैरा रेडियो लाता है)

रानी : (शोफ़र से) देखो—इसे यहाँ रखवाओ—यहाँ।

(शोफ़र वार्ड रोब रखवाता है। तारा और रानी देखती हैं। मज़दूर लगा देते हैं तो शोफ़र पूछता है)

शोफ़र : ये जाएँ ?

रानी : हाँ-हाँ—क्यों तारा ? सैटिंग तो कल करेंगे।

तारा : अरे हाँ-हाँ। इतनी तो थक गई हो आज। तुम लोग जाओ।

(मज़दूर सलाम करके जाते हैं)

रानी : शोफ़र, तुम अब जाकर गाड़ी साफ़ करो। हम आते हैं।

(शोफ़र सलाम करके जाता है। बैरा भी जाने लगता है। रानी उसे रोकती है)

रानी : देखो तुम यहीं ठहरो। मेम साहब हमारे साथ बंगले तक जाकर अभी आ जाएँगी।

तारा : रानी, आज तो रहने दो। फिर चली चलूँगी।

रानी : देख मुझ से चालाकी मत बरत। मैं जानती हूँ तू पर्दे न लेने के मारे मना कर रही है।

तारा : हाँ रानी—तेरे वैसे ही बड़े अहसान...।

रानी : देख, अगर ऐसी एक बात भी और कही तो चपत लगा दूँगी। सीधी चल और पर्दे ले आ।

तारा. : यानी इस घर की शक्ल बदल कर रहेगी ?

रानी : मैं क्या बदलूँगी। अब तो तू बदल रही है। पैसे तेरे हैं।

तारा : (नौकरी करने की बात याद आते ही) पर रानी मेरा दिल धड़क रहा है। उनसे पूछे बिना...।

रानी : फिर वही कायरपन की बात। अरे तूने गिरीश के नौकरी की है, किशोरजी से तलाक़ तो नहीं लिया।

(तभी कपड़े लिये शोफ़र आता है)

शोफ़र : मेम साहब !

रानी : सब ले आए ?
शोफ़र : जी मेम साहब ।
रानी : देखो इस वार्ड रोब में टाँग दो ।
(शोफ़र कपड़े टाँगता है । पहले गाउन टाँगता है । रानी गाउन देखकर)
रानी : ख़ूबसूरत लग रहा है यह गाउन !
तारा : अरे तभी तो मैंने देखते ही पसन्द किया । और सूट का कलर भी तो देख ।
रानी : अरे उसका फाइबर और टैक्सचर देख । जीजा जी छूते ही थ्रिल्ड हो उठेंगे ।
(शोफ़र टाईयाँ और शर्ट खाने में रखकर वार्ड रोब बन्द करता है)
रानी : अच्छा तुम चलो, हम जाते हैं ।
(चला जाता है)
तारा : अच्छा अब चलें । फिर मुझे आना भी है । बैरा, तुम इतने सब ठीक-ठाक करना ।
रानी : चल !
(दोनों जाती हैं । उनके जाने पर बैरा कमरे को ठीक-ठाक करने लगता है । कुछ देर बाद किशोर आता है । अर्दली बिस्तर साथ लिए है । कमरे में दाख़िल होते ही वह हैरान रह जाता है । बैरे को देखकर···)
किशोर : तुम यहाँ कैसे हो ? बीबीजी कहाँ हैं ?
बैरा : मेम साहब के साथ गई हैं ।
किशोर : और यह सब कुछ क्या है ? कहाँ से आया ?
बैरा : छोटी मेम साहब लाई हैं ।
किशोर : (हैरान) छोटी मेम साहब ?
बैरा : जी । अभी रखवाकर गई हैं ।
(हैरानी से अर्दली की तरफ़ देखता है । फिर वार्ड रोब खोल

कर देखता है। शृंगार मेज़ देखता है और फिर कुछ सोचकर अन्दर जाता है)

अर्दली : यह सब कुछ कब आया ?

बैरा : आज ही।

अर्दली : मगर साहब तो बाहर थे।

बैरा : मेम साहब ने सर्विस करली है न (अर्दली झुककर रेडियो देखने लगता है कि किशोर तेज़ी से अन्दर से आता है)

किशोर : करीम खाँ !

अर्दली : (डरकर) जी।

किशोर : क्या देख रहे हो इसे। बिस्तरा अन्दर रखो और जाओ (वह बिस्तर उठाता है) बैरा—तुम भी जाओ। हम आ गए हैं। (बैरा गर्दन झुकाकर जाता है। अर्दली भी अन्दर से आकर जाता है। किशोर गुस्से के मारे बेचैनी से इधर-उधर घूमता है कि तारा आती है)

तारा : (बड़े प्यार से) आप आ गए ?

किशोर : (पलटकर) हाँ। मगर यह सब क्या है ?

तारा : (मुस्कराते हुए) हमारा सामान। मगर तुम बाहर से आए हो। साँस लो—जूते खोल दूँ ?

किशोर : (कठोरता से) नहीं—पहले यह बताओ यह आया कहाँ से। कौन लाया ?

तारा : तुम्हारी तारा।

किशोर : (ज़ोर से) मगर कहाँ से ?

तारा : खरीद कर।

किशोर : यह मैं भी जानता हूँ। मगर इसके लिए पैसे कहाँ से आए ?

तारा : (नर्मी से) (पकड़कर बिठाते हुए) तुम बैठो तो···मैं सब बताऊँगी। सच मैं तुम से पूछे बिना कभी सर्विस न करती, अगर रानी ने—

किशोर : (तेज़ी से उठकर) तो तुम रानी की नौकरानी हो ?

तारा : नहीं, नहीं। मैंने गिरीश के आफ़िस में···

किशोर : (पूरे गुस्से से आँखें फाड़कर) क्या ?

तारा : नाराज़ न हो किशोर। वह बुरा आदमी नहीं है।

किशोर : यह मुझे मालूम है। सिर्फ़ मुझे इतना बताओ कि गिरीश के हाथों तुमने अपने को कितने में बेचा ?

तारा : (तड़पकर) किशोर (फिर नर्म पड़कर) उसने मुझे रिप्रिज़ेंटेटिव रखा है। वह पाँच सौ देगा।

किशोर : और कापी का ?

तारा : (बौखलाकर) कापी ! कैसी कापी !

किशोर : जो उन बहीखातों में थी, जो जाते हुए मैं अन्दर रखवा गया था।

तारा : मुझे किसी कापी के बारे में कुछ नहीं मालूम।

किशोर : सच कहती हो ?

तारा : (झूठ बोलती है) आ हाँ।

किशोर : बेबी की क़सम खाकर कह सकती हो ?

तारा : (लगभग भय से चीख़कर) किशोर !

किशोर : तो तुमने कापी बेची ?

तारा : हाँ।

किशोर : कितना लेकर ?

तारा : पाँच।

किशोर : सौ ?

तारा : हज़ार।

किशोर : (सिर पकड़कर कुर्सी पर बैठ जाता है) ओह ! तो अन्दाज़ा सही निकला। मेरी बीवी ने मेरे ही घर में मेरे ही ईमान को पाँच हज़ार में बेच डाला।

तारा : (विनय से) देखिये, सुनिये—इस बात को इतना जी से न

लगाइये। सुनिये—(ठोड़ी छूती है)

किशोर : (झटककर) बस-बस, मुझे इन हाथों से न छुओ। मुझ से दूर हो जाओ।

तारा : ऐसे न कहो। मैं नहीं कहती मैंने सही किया। पर यह भी ग़लत है कि मैंने तुमसे धोखा किया है।

किशोर : (भड़ककर) तुमने धोखा नहीं किया ?

तारा : (द्रवित होकर) हाँ, मैंने बस तुम्हारे लिए अपने उस प्यार को वचाने की कोशिश की है, जिसे आए दिन की तंगी और वे झगड़े खत्म कर रहे थे, जिनकी तह में हमेशा रुपये के रोने होते थे। अब वे झगड़े नहीं होंगे।

किशोर : क्योंकि तुम पाँच सौ रुपये लाओगी—अपने को वेचकर।

तारा : ऐसे न कहो। मैंने अपना समय बेचा है। मैं काम करूँगी।

किशोर : काम ? मुझे बताओ तुम क्या काम कर सकती हो ? तुम्हें बिज़नेस आता है ? अकाउण्ट आता है ? टाइप आता है ?

तारा : मेरा···मेरा काम और होगा। मैं दफ़्तरों में जाऊँगी।

किशोर : (घृणा और ग्लानि से) और अपनी निगाहों, अपनी मुस्कराहटों, अपने कपड़ों से झाँकते बदन की रिश्वत देकर लोगों से खिलाफ़ कानून काम कराओगी ? अपना औरतपन वेचकर औरों के ईमान खरीदोगी ?

तारा : नहीं-नहीं। मैं विश्वास दिलाती हूँ ऐसा कुछ न करूँगी जिससे तुम्हारी इज़्ज़त···

किशोर : (बड़ी वेदना से) मेरी इज़्ज़त ? उसे तो तुम गिरीश के गिरवी रख आई हो।

तारा : पर मैं अब भी तुम्हें ही चाहती हूँ।

किशोर : मुझे ? नहीं। अब तुम सिर्फ़ उस किशोर को चाह सकती हो जिसके बदन पर जयन्त का सूट हो। गिरीश का हैट हो। चढ़ने को कार और उतरने को क़ालीन हो।

तारा : लेकिन अब हमारे पास भी यह सब कुछ हो जाएगा।

किशोर : लेकिन ईमान और उसूलों को बेचकर हासिल होने वाले सामान को भोगने के लिए मैं नहीं हूँगा।

तारा : (चौंककर) किशोर !

किशोर : हाँ। मैं इस शहर से तबादला कराके चला जाऊँगा। मैं तुमसे इतनी दूर चला जाऊँगा कि तुम्हारा साया भी मुझपर न पड़े।

तारा : (उसके पास आकर) नहीं-नहीं। यह नहीं हो सकता। तुम नहीं जाओगे।

किशोर : (परे हटकर) मैं जाऊँगा और मेरे साथ बेबी भी जाएगी।

तारा : क्या ? बेबी ? नहीं-नहीं, तुम बेबी को नहीं ले जाओगे।

किशोर : मैं बेबी को ले जाऊँगा, क्योंकि तुम उसकी माँ बनने लायक़ नहीं हो। मैं उस पर तुम्हारी छाप न पड़ने दूँगा।

तारा : नहीं-नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। मैं बेबी को कभी नहीं दूँगी—कभी नहीं दूँगी (कलेजा मसोसती हुई बैठ जाती है)

किशोर : तुम्हें देनी होगी। तुम नहीं दोगी तो मैं क़ानूनन लूँगा।

तारा : (चौंक पड़ती है। फटी-फटी आँखों से देखते हुए उठती है) तुम कोर्ट जाओगे ? मुझपर इलज़ाम लगाओगे ?

किशोर : हाँ ! अगर मजबूर करोगी तो इलज़ाम भी लगाऊँगा।

तारा : तुम इतने जल्लाद हो गए हो ?

किशोर : और तुम ? तुमने मेरे साथ क्या किया ? (वेदना से) मैं ज़िन्दगी में बस ईमान और आदर्श की पूँजी लेके चला था। मैंने बस तुम्हारी मुहब्बत का चिराग़ जला के चोरों की इस दुनिया में रात काटनी चाही थी। लेकिन तुम चोरों से मिल गईं। तुमने चिराग़ बुझा दिया। मुझे अन्धेरे के रहम-ओ-करम पर छोड़ दिया। (आवाज़ रुँध जाती है)

तारा : नहीं-नहीं, ऐसे न सोचो। मैंने तुम्हें अकेला नहीं छोड़ा। मैं

अब भी तुम्हारे साथ हूँ । मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगी ।

किशोर : (कटुता, विषाद और वेदना से) अपने सपनों को पूरा करके, मेरे ख्यालों का खून करके, मुझ मेरे ईमान और आदर्श से महरूम करके तुम आज मुझे सहारा देने आई हो ? (उसे कन्धों से पकड़कर) दूर हो जाओ मेरी नज़रों से (नीचे गिरा देता है । धीरे-धीरे स्टेज के अगले सिरे की तरफ़ बढ़ते हुए सामने शून्य में देखते हुए) अपने ग़ैरों से मिल गये । ग़ैर अन्धेरों से मिल गए—(यकायक खड़ा होकर पूर्ण निश्चय और आत्मबल के साथ) लेकिन मैं हारूँगा नहीं, क्योंकि मैं, मैं नहीं हूँ (अपने हाथ कूल्हों पर रख लेता है और ऊपर की ओर देखते हुए चिराग़ की लौ की तरह तनकर) अन्धेरे के सीने को दाग़ती हुई चिराग़ की लौ हूँ ।

(सारी लाइटें उसके चेहरे पर पड़ती हैं और परदा दाएँ-बाएँ से आकर उसे ढक लेता है ।)

(समाप्त)

